UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178765
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H87 A88H Accession No. G.H3107

Author आत्मा

Title हास्य का ज्योति

This book should be returned on or before the date last marked below.

हास्य-कल्लोल

—आत्मा

आत्मा प्रकाशन, पटना–१

प्रकाशक

आत्मा प्रकाशन, पटना--१

मुद्रक

आत्मा प्रेस, पटना--१

आमुख

आत्माजी एक सफल व्यंग्य चित्रकार—कार्टूनिस्ट—हैं। यों चित्रों की अपनी एक भाषा होती है जो सारे संसार में समान रूप से समझी जाती है, किन्तु चित्रकारों की भिन्न-भिन्न भाषाएं होती हैं और वे अपने-अपने क्षेत्र में ही समझी जाती हैं। इस प्रकार आत्माजी हिंदी क्षेत्र के व्यंग्य-चित्रकार हैं, अंग्रेजी क्षेत्र में भी उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। उनका व्यंग्य बहुत चुटीला होता है। सफल व्यंग्य का लक्षण यह है कि जिसके प्रति व्यंग्य किया गया हो उसके होटों पर भी मुस्किराहट खिल उठे! यह एक बड़ी महत्वपूर्ण कला है।

"हास्य-कल्लोल" में व्यंग्य चित्रों के साथ अनेक हास्य-व्यंग्यपूर्ण चुटकुले हैं। चुटकुलों में चोट करने की व्यापक शक्ति रहती है, मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलताएं कभी-कभी चुटकुलों के अच्छे विषय बन जाती हैं। चुटकुलों का विषय साधारणतः व्यक्तिगत होता है, किंतु चोट वह सामान्य मानवता पर करता है। समझने वाले यह समझ लेते हैं कि चोट किसको और कहां लगी है।

आत्माजी ने अपनी प्रतिभा का जो परिचय दिया है उससे यह आशा बंधती है कि वे इस क्षेत्र में अशेष यश अर्जित कर सकेंगे। मेरी शुभकामनाएं उनके साथ रहेंगी।

लक्ष्मी नारायण सुधांशु

अध्यक्ष,
बिहार विधान सभा

पटना,
९ सितम्बर १९६३ ई०

विषय-सूचि

"वैरी गुड !"	११	क्वार्टर से शराब की बोतलें खोलने	
फिर भी पीता है	११	का तरीका	२२
हमेशा अन्दर ही रहता	१२	वर्षा	२२
मौत का क्या ठिकाना !	१२	भोजन	२४
कर्नल समझने लगता हूं	१२	सब लड्डू खा गया	२४
मुझसे डाट खो गयी	१२	इसकी सुई बदल दो	२४
खरीदना छोड़ दिया है	१२	महात्मा गांधी, जहां हों वहां !	२४
भीड़ से अलग रहना	१४	वही मेरे लिए सारी दुनिया है	२४
गोली मार लूंगा	१४	कैसे याद रख सकती हो	२४
फिर देखा जायगा	१६	घबराने की कोई बात नहीं	२६
ऊपर उठाया	१६	मन से इतना बोझ उतर गया	२६
मेरी बात तो मानेगा	१६	नहीं ले रखा है	२६
मेरा नाम अब्दुल कहां है ?	१६	घूमते बितानी पड़ेगी	२६
'पारकर' लिखा हुआ था	१६	आज तो वह घर पर ही है	२६
सावधान तो उसे रहना चाहिए	१८	खिड़कीसे मछली पकड़ा करता था	२८
संकल्प ही कर लिया	१८	हे भगवान, अबतक तुम कहीं हो	२८
मुवक्किलों को धोखा दिया था	१८	यह उनका टेलीफोन नंबर है	२८
मुझे खोटा पैसा दिया करते थे	१८	मैं तो वहां जाकर सो जाता हूं	३०
पहले चित्र उलटा लगा था	१८	क्या वे इतना भी नहीं जानते ?	३०
"जी, अभी इसी समय नहीं"	२०	लम्बी-लम्बी घास लगी है	३०
ग्राहक से पूछिये	२०	जरा बतला दीजिये ।	३०
आवाज गूंजती रहती है	२०	अपना रुपया याद आ जाता है	३०
चार मरीजों को जो भगा दिया	२०	शरीर से गंदगी भी जाती रही	३२
ले जा रहा था	२०	हमलोग कुछ ड्रिंक कर लें	३२
वह कुत्ते को चुकाना नहीं पड़ता	२२	नया हैट पहन कर गई थी	३२
दूसरी बात भी हो सकती है	२२	छुट्टीवाले दिन ही क्यों मरी ?	३४
वह "वैक" से भी दूर है	२२	रोलर कितना पतला हो गया है	३४
क्लास शुरू हो गया था	२२	पूछ-ताछ की खिड़की उस तरफ है	३४

किराया बहुत बढ़ा रखा है ३४
तीन खत थे ३४
मगर कहा उसने सुनी मैं ने ३६
दो कुर्सी ले दीजिए ३६
वह पसीने की रोटी खाने लगा ३६
कभी-न-कभी ३६
चलो आप ही से पूछ लूं ३६
मेरी वह आशा अब पूरी हो गई ३८
मैं उसे बिल्कुल भूल गया हूं ३८
मार खाकर आ रहा हूं ३८
मैं सपनों को साफ-साफ देख सकूं ३८
शायद डाकू आ रहे हैं ३८
फाँसी के तख्ते की ऊंचाई है ३८
कुत्ता तो अखबार पढ़ेगा नहीं ४०
बार-बार छूट गया ४०
जी हाँ, दोनों वकील हैं ४०
केवल अपनी प्रतिभा दिखानी है ४०
लेकिन क्या खाकर ? ४०
रोज-ब-रोज की ताजी मिठाई की दूकान ४२
"चीपों ! चीपों !" ४२
पीछे-पीछे तो आप भी आ रहे हैं ४२
वह कभी खोता ही नहीं ४२
लोग बे-मौत मर जाते ४२
गंगाजल तो अमृत है, पानी नहीं ४२
इसी कारण दूध पतला होता है ४४
नौकर को इनाम दे दिया ४४
मुझको रुला डाला ४४
हर चीज इसी में खोजते हैं ४४
सब शिकायतें दूर हो जायेंगी ४६
आप उसे साबित नहीं कर सकती ४६
मैं अपने सिर के बल खड़ा नहीं हो सकता ४६
मारने के लिए सापों को उठा लिया करता था ४६
कभी को गिर चुका ४६
जहाँ चूहे न खा जायें ४८
खींच तो बिल्ली रही है ४८
लाल बत्ती को रखने के लिए ४८
वह आपके बड़े काम का है ४८
जो एक आवाज में बोलें ४८
एक ही पैर के दो जूते बांध दिये हैं ४८
खूब छाँटि उछालूंगा ५०
आठ आनेवाली तक बनवाऊंगा ५०
डाक से भेज दो न ! ५०
मैं पाँच रुपये फीस लेता हूं ५०
ऐसी भद्दी सूरत है, ५२
एक थाल के दो थाल हो जाते हैं ५२
मालिक तुम्हारा भर्ता बनावेंगे ५२
पिताजी को उंगलियों पर नचाती हो ? ५२
तब भी वह रोता था ५२
कितनी उगलियां हैं ५४
लो बेटा, पेड़ा खा लो ! ५४
तुम्हारे बाप के अस्तबल में ५४
हम पागल हैं ५४
दस मन भी उठा ले सकता हूं ५६
झूठ बोलूं तो उसपर डटा रहूं ५६
मैं साबुन से फिसल गया था ५६
वह भी विश्वासी आदमी है ५६
थोड़ा गुड़ हो तो मुझे दे दो ५६

हाथी के दाँत ही नकली रहे होंगे ५८
पहले तो बड़ा अचरज लगेगा ५८
बिना लंगोट पहने आना ५८
अग्नि दीनी तो भड़ाम शब्द भयौ ६८
न ल ही सकते है ५८
आओ शर्त लगाओ ५८
चीनियों की ५८
तब मुझे इसकी दो प्रतियां दे दें ६०
डरने की कोई बात नहीं ६०
सिर पर रखकर चले ६०
कुछ भी नहीं आता ६०
तेरा भाई है ६०
हरे चश्मे से इसे हरी दीखे ६०
नम्बर नोट कर सकूं ६२
देखता रहा हूं ६२
गिन लेता हूं ६२
दुर्घटना हो गई है ६२
उसके आधे ! ६२
फासला नाप लिया था ६२
पास पैसा चाहिए ६४
वह हाथी तो नहीं जानता ६४
अखबार नहीं आया ६४
हां मेहरबान ! ६४
कोशिश ही नहीं करते ६४
गले में बांधने से दम घुटता था ६४
सोलह कविता पाँच छोटी कहानियाँ और नौ लेख ६६
मुंह से निकल जाती है ६६
वह भींगी नहीं थी ६६
अभी ड्युटी पर नहीं हूं ६६
तभी से बेहोश है ६६
मेज पर अपने चश्मे को ६६
बढ़िया खाल कहाँ मिलती ६८
वक्त देखी थी ६८
बहुत ऊंचा है ६८
यह अखबार तो कल का है ६८
रेलवे लाइन्स के पास बनाना चाहते थे ६८
टाइम देखने के लिए चढ़ा था ६८
गद्दे का एक कोना गायब है ६८
'शायद' नहीं, 'शर्तिया' चाहिए ७०
आप गलत गाड़ी में आ गये हैं ७०
सिगरेट से जलता रहा ७०
मुझे अंधा बना दिया था ७०
भाड़े का टट्टू नहीं ७०
मुझे भी जानना है ७२
हिसाब साफ क्यों नहीं कर लेते ७२
तुझे ये लोग सुधार देंगे ७२
पर आज है ७२
सही लिखना ही चाहता हूं ७२
बहुत चौड़ी और बहुत मोटी है ७४
पृथ्वी कैसी है ? ७४
जाड़े में छोटा हो जाता है ७४
हजार विद्यार्थी निकल चुके होंगे ७४
कोई हाथ भी आया ७४
पी ले तो न मालूम कितना चले ७४
कोई रोक नहीं है ७६
बहुत मोटी है ७६
चारपाई से ७६
टोपी बाईस इंची पहनता है ७६
बेचने का नहीं है ७६
बटन प्लास्टिक के है ७६

वे क्या कहेंगे ७६
खिलाने पर मर गया था ७८
अनुभव हो गया ७८
पलरा बराबर रहेगा ८०
हर्गिज नहीं ! ८०
बरखास्त किया ८०
बिल्कुल सूती ८२
धोखे में डालने के लिए लगायी ८२
चांदी की मुगदर है ८२
गिरवी रखने का काम करता हूं ८२
अमेरिका कौन है ? ८२
काली मुर्गी के पीछे दौड़ रहे हो ८२
बूढ़े दादा को गन्ना चबाने के लिए ८२
चीन को नहीं देख सकते ८४
बैल-घोड़े को बिल चुकाना नहीं ८४
अनाथ बालक, मास्टर साहब ! ८४
वैसा ही दिखाना ८६
मैं नहीं जाऊंगा ८६
भटकना नहीं पड़ता ८६
पुराने अचार जैसी बू आती है ८६
हम बेचारे तो पढ़े ही नहीं ८८
मुझे बेवकूफ बना दोगे ८८
आपको दाँत दे दिये जायेंगे ८८
किस पिंजड़े में ? ८८
शहर में कहाँ मिलेगी ८८
उलटी टोकरी ही तो है ९०
दक्खिन किस तरफ है ९०
कोशिश कर रहा हूं कि न लूं ९०
दो मेरे पास पहले से ही मौजूद थे ९०
अभी गवाही नहीं सुनी ९०
अपने औजारों के लिए ९०
पहले तो यह घास था ९०
सुन्दर रीडिंग लैम्प खरीदा है ९२
कहानी को इन्कार कर दिया है ९२
दुनिया से कब के बिदा हो गये ९२
आपको स्वयं करना होगा ९२
किस समय जाऊंगा ९२
वह भी उसी में होगा ९४
हाँ, सिर्फ विश्वास ! ९४
मकान में आग लग रही है ९४
गर्मी में गरम और जाड़े में ठंडा ९४
उत्तर देती तो क्या ? ९६
लूटे हुए को ९६
छुट्टी के लिए दरखास्त देनी है ९६
डूबने दे, हमें क्या ? ९६
चश्मे से वह हरा दीख पड़ेगी ९८
स्वर्ग छोड़कर इधर चला आया ९८
दादी फिर विवाह करने जा रही ९८
बाग में आदम और हव्वा से ९८
आप जानो साहब ९८
क्योंकि वह एक गधा है १००
कौन ? मैं ? १००
घड़ी को वापस तो न करना होगा १००
आध-आध घंटे तक १००
एक बूंद भी नहीं है १००
आप मेरे पैर में चुटकी ले रहे १०२
लड़का जरूर अ-कांग्रेसी है १०१
बारिश हो ही नहीं रही है १०४
उसीका हिसाब करने आया हूं १०४
मेरी ओर क्यों न आया १०४
किसी बैंक में नहीं गया १०४
मेरा गलत कदम नहीं पड़ सकता १०४

—: o :—

कार्टून

किरानी बनाम बैंक	१३
शंकालु पति	१५
कुत्ता की कृपा	१७
श्रम	१९
कॉलेज की शिक्षा	२१
भूख बढ़ती है	२३
फाइल	२५
मुन्ना की बात	२७
प्रेम-विवाह	२९
कर्त्तव्य	३१
विद्यार्थी	३३
यह क्या	३५
पैरवी	३७
पत्नीव्रत	३९
घोड़ा बनाम जिराफ़	४१
स्मरण-शक्ति	४३
पता नहीं	४५
दूसरों का कष्ट	४७
प्रदर्शन	४९
पेशा	५१
जवाबदेही	५३
केवल भाषण	५५
मंत्रीजी का रोना	५७

पन्द्रह नये पैसे ५९
प्रैक्टिस ६१
महा मुश्किल ६३
पिता की नकल ६५
नगदा-नगद ६७
अनुरोध ६९
बदमाश घोड़ा ७१
"इस्माइल प्लीज" ७३
हिसाबी पत्नी ७५
दौड़ ७७
रौंग नम्बर ७९
बोझा ८१
नाक की बोली ८३
दवा है ८५
अस्तूरा काण्ड ८७
निरपराध ८९
बड़ा आदमी का बेटा ९१
सिफारिश ९३
पत्नी को पैदल नहीं घुमाइये ९५
ट्रेन दुर्घटना ९७
आत्महत्या व. दायित्व ९९
सुधार १०१
सिंह बनाम छोटी चिड़ियां १०३

हास्य-कल्लोल

किसी ने अंग्रेजी के सिर्फ तीन शब्द सीख रखे थे, जिन्हें वह मौके-बे-मौके नम्बरवार प्रयोग करता था—

"तुमने चोरी की है ?"

"यस" !

"माल लौटा दोगे ?"

"नो !"

"तब तो तुझे कैद की सजा मिलेगी ।"

"वैरी गुड !"

० ० ०

एक महाशय अपने नये दामाद की शिकायत करते हुए कह रहे थे, वह पी नहीं सकता, न वह ताश खेल सकता है ."

एक मित्र—"दामाद ऐसा ही चाहिए ।"

महाशय—"नहीं, वह ताश नहीं खेल सकता फिर भी खेलता है, वह पी नहीं सकता फिर भी पीता है ।"

एक नौजवान शराबखाने से निकला। उसे देखकर एक महिला बोली, "तुम्हें इस जगह से निकलते देखकर मुझे बड़ा दुख होता है।"

"तो क्या मैं हमेशा अन्दर ही रहता ?"

० ० ०

दो शराबी किसी शराबखाने से निकलकर जंगल में कहीं दूर भटक गये। चलते-चलते रात हो गयी। उनमें से एक अंधेरे में किसी पत्थर से टकरा गया और बोला—मालूम होता है हम किसी कब्रगाह में पहुंच गये। दूसरे ने दियासलाई जलाकर पढ़ा—

"माइल्स सोलह, लंदन।"

पहला शराबी रोकर कहने लगा, "यार देख यह बेचारा माइल्स जो लंदन का रहनेवाला था—कुल सोलह साल की उम्र में मर गया! मौत का क्या ठिकाना!"

० ० ०

मेजर—"इतना ज्यादा क्यों पीते हो? तुम्हें पता है कि अगर तुम्हारा रिकार्ड अच्छा रहता तो अभी तक तुम कारपोरल या सार्जेण्ट हो गये होते।"

जवान—"माफ फरमाइएगा हुजूर, मगर बात यह है कि जब चंद कतरे अंदर पहुंच जाते हैं तो मैं अपने को कर्नल समझने लगता हूं!"

० ० ०

शराबी—हुजूर, मेरा इरादा यह नहीं था कि एकबार मैं सारी बोतल पी जाऊं।"

जज—"तो फिर पी क्यों गये तुम?"

शराबी—"बात यह हुई साहब, कि मुझसे डाट खो गयी।"

० ० ०

एक—"जरा एक सिगरेट देना।"

दूसरा—"मैंने सोचा था कि तूने पीना छोड़ दिया।"

पहला—"मैं अभी त्याग की पहली मंजिल पर हूं, अर्थात् खरीदना छोड़ दिया है।"

"किरानी बनाम बैंक !"

पति—"जब तुम्ने मुझसे विवाह किया, क्या उस समय यह नहीं जानती थी कि तुम बैंक के एक किरानी से सादी कर रही हो ?"

पत्नि—"हां, जानतो तो थी—लेकिन मतलब ?"

पति—मतलब यह कि तुम्हारे हिसाब-किताब को देखकर तो यह मालूम होता है कि विवाह के पूर्व शायद तुमने सोचा था कि बैंक के साथ ही तुम्हारा विवाह हो रहा है।

एक देश के राजा को उसके मंत्री ने एक दिन कहा कि लोग अपनी स्त्रियों के कहने पर चलते हैं। राजा को यह बात झूठ मालूम पड़ी। वह अभी कुंवारा था।

मंत्री की बात की परीक्षा के लिए एक दिन राजा ने राज्य के सारे विवाहित पुरुषों को बुलाया और कहा कि तुम्हें एक प्रश्न का उत्तर देना है, लेकिन झूठ बोलने पर फांसी दे दी जायगी।

प्रश्न यह था—"क्या तुम अपनी स्त्री के कहे पर चलते हो?"

जिनका जवाब 'हां' में था, उन्हें राजा के बायें हाथ की ओर खड़ा हो जाना था, जिनका 'नहीं' में, उन्हें दाहिने हाथ की ओर।

एक-एक करके सारे मनुष्य बायें हाथ की तरफ खड़े हो गये। केवल एक मनुष्य जो कुछ पीछे खड़ा था, आकर दाहिनी ओर खड़ा हो गया।

राजा को बहुत क्रोध आया! पर वह बोला, मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे राज्य में कम-से-कम एक आदमी तो ऐसा है जो अपनी बुद्धि से काम करता हो। अच्छा, अब तुम इन सबों को बताओ कि तुम दायें हाथ क्यों खड़े हुए।

'हुजूर', उस आदमी ने कहा, 'जब मैं घर से चला था, तो मेरी स्त्री ने कहा था कि भीड़ से अलग रहना।'

० ० ०

जल्लाद (कैदी से)—जानते हो, तुम्हें फांसी देने में सरकार को ५००) रुपये का खर्च बैठ जायगा।

कैदी—सचमुच? ऐसा करो! मुझे ५० रुपये ही दे दो मैं अपने आपको गोली मार लूंगा।

"मेरा पति आज तीन महीने से बिल्कुल बहरा हो गया है—
लेकिन उसकी जानकारी वह मुझे नहीं देना चाहता है।"

पत्नी—यह खड़खड़ाहट की आवाज कहां से आ रही है ? देखो, घर में कोई चोर तो नहीं घुस गया ?

पति—अंधेरे में क्या नजर आयगा। दिन निकलने दो फिर देखा जायगा।

० ० ०

प्रोफेसर—आज मैं अपना छाता ले जाना भूल गया।

पत्नी—यह तुम्हें कब पता चला ?

प्रोफेसर—जब वर्षा बंद होने पर उसे बंद करने के लिए मैंने हाथ ऊपर उठाया।

० ० ०

प्रोफेसर—देखो रामू, बाहर जो आदमी खड़ा है उससे तुमने कह दिया कि क्या मैं घर पर नहीं हूं ?

रामू—सरकार, कह तो दिया पर वह विश्वास नहीं करता।

प्रोफेसर—ओह, तो मुझे ही जाकर कहना पड़ेगा। मेरी बात तो मानेगा।

० ० ०

एक बार एक दार्शनिक किसी नाई की दूकान पर हजामत करवा रहा था। अचानक कोई सड़क पर चिल्लाया—"मियां अब्दुल साहब, आपके मकान में आग लग गई।"

वह तड़प उठे। हज्जाम को दूर ढकेल दिया। गले का सफेद कपड़ा एक ओर दे मारा। चेहरे का साबुन एक दूसरे साहब पर फेंका। दो ग्राहकों से बड़ी बुरी तरह टकराए, सड़क पर कूदे, फिसले, गिरे, फिर उठे, एक दही बाड़े वाले से टकराए, उछलकर भागे, कुछ दूर जाकर रुके और शर्मिन्दा होकर बोले, "ओह ! मैं भी क्या हूं ? मेरा नाम अब्दुल कहां है ?"

० ० ०

जज—'तुमने इस आदमी का पेन क्यों पार किया ?'

अपराधी—क्योंकि इसके पेन पर 'पारकर' लिखा हुआ था।

"कुत्ता की कृपा !"

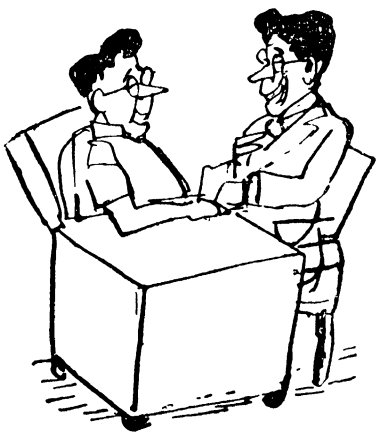

"जानते हैं, आपका कुत्ता आज स्टेशन तक मुझको रपेटा था ? मैं आपके ऊपर मामला दायर करूंगा।"

"अरे भाई, इसके लिए तो आपको कृतज्ञ होना चाहिये !"

"सो क्यो ?"

"कुत्ता अगर आपको रपेटता नहीं तो क्या आप सुबह का ट्रेन पकड़ सकते ?"

ज्योतिषी—एक सुन्दर युवती बार-बार आपके रास्ते में आयगी, लेकिन आप उससे सावधान रहिये।

एंजिन ड्राइवर—मुझे सावधान रहने की क्या आवश्यकता है? सावधान तो उसे रहना चाहिए।

० ० ०

आर्क बिशप व्हाटले से किसी ने एक बार प्रश्न किया कि क्या आप प्रातःकाल जल्दी उठते हैं। उत्तर मिला—एक बार जल्दी उठा था किन्तु सारी सुबह मुझे इसका इतना गर्व रहा और दोपहर में नींद इतनी सताती रही कि मैंने फिर कभी जल्दी न उठने का संकल्प ही कर लिया।

० ० ०

वकील (एक गवाह से)—क्या तुम कभी जेल गये हो?

गवाह—हां, एक बार।

वकील (जज से) अब आपही देखिये कि स्वयं जेल से आये हुए गवाह की बात पर कैसे विश्वास किया जा सकता है।

जज (गवाह से) तुम किसलिए जेल गये थे?

गवाह—मेरा काम पुताई करना है। मैं जेल में एक कोठरी पोतने गया था। उस कोठरी में एक वकील कैद था, जिसने अपने मुवक्किलों को धोखा दिया था।

० ० ०

मेम साहिबा (एक लंगड़े फकीर से) ले लंगड़े, एक पैसा ले। तेरे लंगड़ेपन पर मुझे तरस आता है। खैर, फिर भी अंधे होने से लंगड़ा होना अच्छा है।

लंगड़ा—आप ठीक कहती हैं, क्योंकि जब मैं अंधा था तो लोग मुझे खोटा पैसा दिया करते थे।

० ० ०

पिकासो के चित्रों की एक प्रदर्शनी में एक चित्र के सामने सबसे अधिक दर्शक खड़े थे। तारीफों के पुल बांधे जा रहे थे। तभी वहां पिकासो आया और उसने चित्र को उलटकर सीधा कर दिया। पहले चित्र उल्टा लगा था।

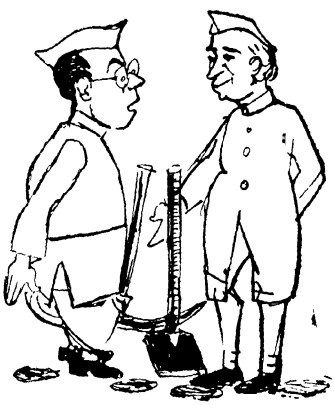

नेहरूजी—"जरा इसको चलाकर देखिये !"

एक बड़े पहुंचे हुए महात्मा श्रोताओं को उपदेश दे चुके तो बोले, "जो लोग स्वर्ग जाना चाहते हों, वे अपना हाथ खड़ाकर दें।" सबने हाथ उठा दिये। केवल एक मनुष्य चुपचाप बैठा रहा।

महात्मा ने गरजकर उस नास्तिक से पूछा—क्योंजी, तुम स्वर्ग नहीं जाना चाहते ?"

"जी, अभी इसी समय नहीं।"

० ० ०

व्यवसायी—क्या आप मुझे बता सकेंगे कि किसी पत्रिका को कैसे चलाना चाहिए ?

संपादक—आप गलत आदमी के पास आये। श्रीमान्, यह तो आप मेरे किसी भी ग्राहक से पूछिये।

० ० ०

युवक (वृद्धा से)—माता जी, आप गलती कर रही हैं। मैं डाक्टर हूं अवश्य, पर संगीत का न कि रोगों का।

वृ -तभी तो मैं आपके पास आई हूं। मेरे कानों में गाने की हल्की हल्की आवाज गूंजती रहती है।

० ० ०

दस साल के एक लड़के का दांत निकालने के बाद डाक्टर ने उसके पिता से कहा—"लाइये पाच रुपये!"

"पांच रुपये! मगर आपने तो पहले कहा था कि आप दांत उखाड़ने का एक रुपया लेते हैं।"

"ठीक है, मगर लड़के की चिल्लाहट ने दांत उखड़वाने के लिए आये हुए चार मरीजों को जो भगा दिया।"

० ० ०

एक आदमी गाय का बछड़ा चुराकर ले जा रहा था कि पकड़ लिया गया। पुलिस के सामने उसने अपनी सफाई दी—

"मेरा इरादा चोरी करने का नहीं था। बात यह है कि मेरे तीन साल के बच्चे ने अब तक बछड़ा नहीं देखा है—उसे दिखाने के लिये ही मैं इसे ले जा रहा था।"

"कॉलेज की शिक्षा !"

"पढ़ा लिखाकर आपने अपने पुत्र को कृषि-कार्य में लगा दिया—आशा है, कॉलेज की उसकी उच्च शिक्षा से आपको पूरी मदद मिलती होगी ?"

"खूब मदद मिलती है, घर में जब कभी कोई आयोजन होता है, तो वह सिगरेट और चाय का प्रबन्ध करता है।"

अर्थशास्त्र का प्रोफेसर—"अप्रत्यक्ष कर का एक उदाहरण दो।"

छात्र—"कुत्ता-कर, महाशय।"

प्रो०—"वह कैसे ?"

छात्र—"क्योंकि वह कुत्ते को चुकाना नहीं पड़ता।"

० ० ०

प्रोफेसर का दोस्त—प्रोफेसर ! मैंने सुना है कि तुम्हारी स्त्री को जुड़वां बच्चा पैदा हुआ है, वे लड़के हैं या लड़कियां ?"

प्रोफेसर—(अन्यमनस्क-सा)—"हां मुझे विश्वास है कि उनमें से एक लड़का होगा और एक लड़की, पर दूसरी बात भी हो सकती है।"

० ० ०

मोहन—"कॉलेज में तुम्हारा भाई क्या है ?"

राम—"हाफ-बैक" है।

मोहन—"मेरा मतलब उसकी पढ़ाई-लिखाई से है।"

राम—"हां, इसमें तो वह "बैक" से भी दूर है।"

० ० ०

प्रोफेसर—"तुम देर से क्यों आये ?"

छात्र—मेरे यहां पहुंचने के पहले ही क्लास शुरू हो गया था।"

० ० ०

"कॉलेज में सबसे कड़ी चीज तुमने क्या सीखी ?" घमण्डी पिता ने पुत्र से पूछा।

पुत्र—"क्वार्टर से शराब की बोतलें खोलने का तरीका", पुत्र ने उत्तर दिया।"

० ० ०

व्याकरण और रचना की परीक्षा चल रही थी। शिक्षक ने 'फुटबॉल-मैच' पर बिल्कुल संक्षेप में लिखने को कहा। एक लड़के को छोड़कर वर्ग भर के लड़के तल्लीन होकर लिखने लगे ! जब समय खतम हो गया और कॉपी लौटाने की बारी आई तो उस लड़के ने अपनी कॉपी में चटपट लिख लिया—

"वर्षा, मैच नहीं।"

"भूख बढ़ती है !"

पत्नी—"परसा हुआ भोजन ठण्ढा पड़ गया और सूटबूट पहनने में आपने घण्टों लगा दिया।"

पति—"घण्टों तो लगे, लेकिन भूख भी तो चौगुनी हो गई !"

"अपनी मां की तरह जब तुम बड़ी हो जाओगी तो क्या करोगी ?"

"भोजन", छोटी लड़की ने कहा।

० ० ०

एक महाशय अपने कमरे में बैठे लड्डू खा रहे थे। इतने में ही उनके एक दिली दोस्त पहुंचा और बोला, "क्यों भाई! अकेले ही अकेले क्या उड़ा रहे हो ?"

महाशय जी—जल-भुनकर बोले, "जहर खा रहा हूं।"

दोस्त—"तब तो इस दुनिया में मेरा जीना बेकार है।" यह कहते हुए उनके सब लड्डू खा गया।

० ० ०

दो घंटे तक लगातार बोलने के बाद एक वक्ता की आवाज भर गई। श्रोताओं में एक ऊंघता हुआ लड़का बोला, "इसकी सुई बदल दो।"

० ० ०

एक विदेशी कलाकार ने गांधीजी को पत्र लिखा। लिफाफे पर पता की जगह पर गांधीजी का एक रेखाचित्र बनाया। उसके ऊपर लिखा, 'टू', और नीचे 'दिस मैन, इन्डिया।' (इस आदमी को, भारत)।

एक और भक्त ने पता यों लिखा—

"महात्मा गांधी, जहां हों वहां!"

० ० ०

"यह तो तुम्हारी प्रियतमा का चित्र है—इसे संसार का नक्शा क्यों कहते हो ?"

"क्योंकि वही मेरे लिए सारी दुनिया है।"

० ० ०

अधेड़ औरत—"देखो उस डायन को, मुझे सन् संतावन के बलवे की बातें पूछती है!"

तीसरी औरत—"जाने भी दो, तुम उसकी बात का ख्याल न करो! वह इतना भी नहीं जानती कि उस जमाने की बातें तुम आज तक कैसे याद रख सकती हो!"

फाइल

फाइल ! फाइल ! केवल फाइल ! फाइल-नियोजन का भी आन्दोलन होना चाहिए।

एक आदमी को अपने मित्रों से मजाक करने की बड़ी आदत थी। उसने मित्र के पास एक बैरंग चिट्ठी लिखी जिसमें सिर्फ इतना ही लिखा, 'मैं अच्छी तरह हूं, घबराने की कोई बात नहीं।'

उस मित्र ने उत्तर में एक बड़ा-सा बैरंग पार्सल भेजा। जब उस आदमी ने पार्सल खोला तो उसमें एक पत्थर निकला जिसपर एक पुर्जा चिपका हुआ था। उसमें लिखा था—'पत्र पाकर मेरे मन से इतना बड़ा बोझ उतर गया!'

० ० ०

महान् रूसी कलाकार गोर्की घूमता-घामता एक बार एक ऐसे गांव में पहुंचा जिसमें उसे कोई नहीं जानता था। जिस समय वह वहां पहुंचा, रात हो चली थी और शरीर को जमा देनेवाली बर्फीली हवा चलने लगी थी! दिन भर के थके मांदे और भूखे-प्यासे गोर्की ने आश्रय के लिए एक द्वार खटखटाया तो भीतर से मकान-मालिक ने कहा, 'भाग जाओ! दुनिया भर के चोरों-बदमाशों को ठहराने का भार मैंने ही अपने ऊपर नहीं ले रखा है।'

इसके बाद गोर्की ने दूसरा द्वार खटखटाया और जब वहां से भी ऐसा ही निराशाजनक उत्तर मिला तो उसने समझ लिया कि आज की रात सड़कों पर ही घूमते बितानी पड़ेगी।

गोर्की कुछ देर इधर-उधर घूमता रहा, किन्तु भूख और सर्दी ने उसको शीघ्र ही एक तीसरे मकान का द्वार खटखटाने को विवश कर दिया। द्वार खटखटाने के बाद गोर्की गृहपति के गालियों से भरे उत्तर की प्रतीक्षा कर ही रहा था कि द्वार के ऊपर की खिड़की धीरे से खुली और फिर किसी स्त्री ने फुसफुसाकर कहा, आज नहीं, आज नहीं। आज तो वह घर पर ही हैं।'

'मुन्ना की बात'

मुन्ना कितने प्यार से कछुए को चूमने के लिए कह रहा है। अगर एक बार उसकी बात रख लो तो क्या हर्ज है ?

सुनते हैं कि इटली की यात्रा से तुम बहुत खुश हुए। कौन-सा शहर तुम्हें अधिक पसंद हुआ ?

'बिना हिचक के मैं कह सकता हूं कि वह शहर वेनिस है।'

'हां, मैं भी यही सोचता हूं कि वेनिस तुम्हें बहुत अच्छा लगा होगा। यह एक ऐतिहासिक और धार्मिक शहर है। संत मार्क की प्रतिमा भी तुम्हें खूब पसंद आई होगी।

'नहीं, मुझे वे सारी चीजें अच्छी नहीं लगीं। मुझे वेनिस इसलिए पसंद है कि होटल के सोने के कमरे में बैठकर उसकी खिड़की से मछली पकड़ा करता था।'

० ० ०

'शिक्षक ने विद्यार्थियों से पूछा, 'भगवान कहाँ हैं ?'

एक छोटे से लड़के ने उत्तर दिया—'हमारे बाथरूम में।'

ऐसा तुम क्या कहते हो जी.?'—शिक्षक ने पूछा।

'क्यों नहीं, प्रत्येक सुबह में मेरे पिताजी बाथरूम के दरवाजे पर खड़े होकर कहते हैं—

'हे भगवान, अब तक तुम वहीं हो ?'

० ० ०

एक शिक्षक ने छात्रों से पूछा—'ईसा मसीह कब हुए ?'

कुछ देर तक चुप रहने के बाद शिक्षक ने कहा—'अपने ओल्ड टेस्टामेंट को खोलकर देखो। वहां क्या कहता है ?'

एक लड़के ने उत्तर दिया —'ईसा, ४०००।'

फिर ईसा कब हुए, इसे तुम क्यों नहीं जानते ?' --शिक्षक ने कहा।

'ओह, मैंने तो समझा था कि यह उनका टेलीफोन नंबर है।' लड़के ने उत्तर दिया।

'प्रेम-विवाह'

"पित जी मेरा श्राद्ध कर देने को तैयार हैं!
लेकिन प्रेम-विवाह नहीं!"

मां—"क्यों गोपाल ! तुम स्कूल में बदमाशी तो नहीं करते ?"

गोपाळ—"नहीं मां ! मैं तो वहां जाकर सो जाता हूं और उठ कर सीधा घर चला आता हूं।"

० ० ०

पांच साल का लड़का (पहले दिन स्कूल से आकर)—"मां ! हमारे मास्टर साहब तो कुछ भी नहीं जानते। बिलकुल अपढ़ मालूम पड़ते हैं।"

मां—"कैसे ?"

लड़का—"वे दिन भर स्कूल में लड़कों से यही पूछते रहते हैं कि—"रावी कहां है ? गंगा-यमुना का संगम कहाँ है, लाहौर कहां है आदि। क्या वे इतना भी नहीं जानते ?"

० ० ०

एक भिखारी बहुत देर तक दरवाजे पर खड़ा आवाज दे रहा था पर बाबू साहब को दया न आई। आखिर अपनी भूख दिखलाने को उसने बाहर मैदान में लगी घास उखाड़ कर खाना शुरू कर दिया।

अंत में बाबू को दया आ ही गई। उन्होंने उससे कहा—"देखो ! उस बगल वाले बाग में चले जाओ, वहां पर लम्बी-लम्बी घास लगी है।"

० ० ०

एक साहब ने अपने नौकर को दो रुपये दिये और उससे कहा—"एक का अंगूर लेते आओ और एक रुपये की मिठाई।"

मूर्ख नौकर थोड़ी देर में लौटकर आया और रुपये दिखाते हुए बोला—"मुझे याद नहीं श्रीमान् ! कि किस रुपये की मिठाई लाऊं और किस रुपये के अंगूर ? जरा बतला दीजिए"

० ० ०

"बड़ा रद्दी तमाशा है ! कौड़ी काम का नहीं।"

"मगर तुम देख तो रहे हो बड़े ध्यान से, जबसे बैठे हो जरा गर्दन नहीं घुमाई।"

"क्या करूं ? इधर-उधर जरा देखता हूं तो अपना रुपया याद आ जाता है।"

'कर्त्तव्य !'

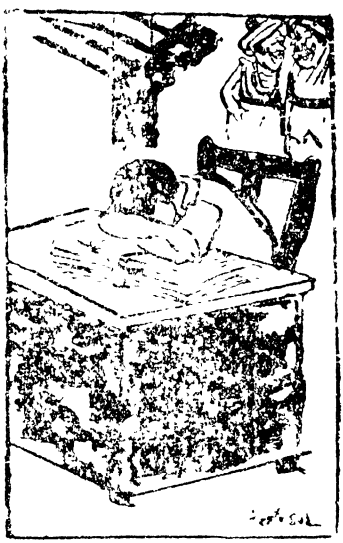

"रात सिनेमा देखना है, इसलिए नींद पूरी कर रहे हैं!"

एक कुआं खोदने वाला अपने कार्य में व्यस्त था। उसने एक ऐसा गहरा कुआं खोद डाला जिससे बाहर निकलना उसके लिए मुश्किल हो गया। यहां तक कि रात हो गई और वह कुएं के अंदर एक अजीब घुटन का अनुभव करने लगा। वह सहायता के लिए जोर से चिल्लाया। उसकी आवाज एक पियक्कड़ को सुनाई पड़ी।

"मुझे यहां से निकाल दो, मैं बिल्कुल सर्द हो गया हूं।" उसने नीचे से चिल्लाकर कहा।

उस पियक्कड़ ने नीचे झांककर देखा और अंत में उस अभागे आदमी के रूप की तजबीज की। "इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि तुम सर्द हो गये हो, लेकिन अब तुम्हारे शरीर से गंदगी भी जाती रही।' उसने कहा।

० ० ०

एक धर्मोपदेशक ने हाल ही घोषणा की है कि दुनिया में पापों की संख्या ७२६ है। अब उनको सूचो के लिए लोग उन्हें घेरकर खड़े हो गये। अधिकांशतः विद्यार्थियों ने उनसे आग्रह किया। शायद विद्यार्थियों ने सोचा होगा कि उस सूचो में कुछ छूट रहा है।

० ० ०

तीन बहरे एक गाड़ी में बैठे लंदन जा रहे थे। जब गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकी तो उनमें से एक ने पूछा—"यह कौन स्टेशन है?"

"वेम्बले" गार्ड ने उत्तर दिया।

"ओ गॉड! मैंने तो सोचा था कि आज थर्सडे है!"

दूसरे ने कहा—

"वही तो मैं भी कहता हूं, तो चलकर हमलोग कुछ ड्रिंक कर लें।" तीसरे ने कहा।

० ० ०

"तुम्हारी पत्नी को आज सुबह चर्च में इतने जोर की खाँसी आई कि सबके सब उसकी ओर ताकने लगे।"

"तुम्हें चिंता करने की बिल्कुल जरूरत नहीं। वह आज नया हैट पहनकर गई थी।"

'विद्यार्थी'

"काक चेष्टा बको ध्यानम्
श्वान निद्रा तथैव च, बेटा !"

"तुम रोते क्यों हो मोहन ?"

"कुछ नहीं, मेरी दादी मर गई।"

"तो तुम रोते क्यों हो बेटा ? अभी तुम्हारी माता, नानी, चाची ..."

"मैं दादी के लिए नहीं रोता, मैं इसलिए रो रहा हूं कि वह आज रविवार को छुट्टीवाले दिन ही क्यों मरी ?"

० ० ०

एक मोटी स्त्री अपनी सहेली से कहने लगी, "मैं अपनी मोटाई कम करने के लिए इस रोलर का तीन महीने से प्रयोग कर रही हूं।"

"कुछ फर्क पड़ा ?"

"देखो न, रोलर कितना पतला हो गया है !"

० ० ०

एक आदमी तार देने गया। उसके पास अपनी कलम नहीं थी। उसने तार घर की कलम से ही तार लिखना शुरू किया। दो तीन फार्म बिगड़ गये, लेकिन ठीक लिखा नहीं गया, उसने तार बाबू से पूछा, "क्या यह वही कलम है जिससे कलाइव ने मुगल बादशाह के साथ संधिपत्र लिखा था ?"

"पूछ-ताछ की खिड़की उस तरफ है, जनाब।" उत्तर मिला।

० ० ०

दो मुनाफिर नाव में सफर कर रहे थे। अचानक नदी में तूफान आया। एक ने डरकर कहा, "यार कहीं नाव डूब न जाये !"

दूसरा बोला—"डूब भी जाने दो, मालिक ने किराया बहुत बढ़ा रखा है।"

० ० ०

"आखिर, इतनी देर तूने कहाँ लगाई ?"

"डाकखाने गया था।"

"एक खत डालने में तीन घंटे लग गये ?"

"नहीं, साहब, तीन खत थे।"

'यह क्या !'

"काम रातदिन मैं करती हूं, और दुबले आप हो रहे हैं।"

मजिस्ट्रेट—"गवाह तो यह कहता है कि तुम में और तुम्हारी पत्नी में कुछ कहा-सुनी हुई।"

मुद्दालह—"जी हुजूर, मगर कहा उसने सुनी मैंने ।"

० ० ०

आगन्तुक—"वकील साहब ! आप शायद मुझे नहीं जानते । मेरे पिता आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं—"

व्यस्त वकील—"कुर्सी ले लीजिए ।"

आगन्तुक—"और मेरे ससुर लोकलबोर्ड के प्रेसीडेंट—"

वकील—" दो कुर्सी ले लीजिए ।"

० ० ०

मित्र—"सुना है कि चोरी के अपराध में आपके लड़के को जेल की सजा हो गयी ।"

पिता (गर्व से)—"हां अब वह पसीने की रोटी खाने लगा ।"

० ० ०

जज—"तुम क्या करते हो ?"

अपराधी—"कुछ-न-कुछ ।"

जज—"काम कहां करते हो ?"

अपराधी—कहीं-न-कहीं ।"

जज ने उसे हवालात में डाल देने की आज्ञा दी । यह सुनकर अपराधी ने बिलबिलाकर पूछा—

"मैं यहां से कब छूटूंगा ?"

"कभी-न-कभी—" जज ने उत्तर दिया ।

० ० ०

"इसके लिए आप किसी वकील के पास क्यों नहीं जाते ?"

"मेरे भाई ने कहा कि यह बात तो कोई बेवकूफ भी बतला देगा, इसलिए मैंने सोचा, चलो आप ही से पूछ लूं ।"

पैरवी

हम आपको शुद्ध घी का बना लड्डू खिला रहे हैं—नेताजी !'
देखिये "डालडा-पैरवी" नहीं कीजियेगा।

बचपन की तुम्हारी कोई आशा सफल हुई या नहीं ?"

"हां, मेरी एक आशा तो पूरी हुई। मां गुस्सेमें जब मेरे बालों को पकड़ कर खींचती थी, तो मैं यही चाहता था कि मेरे सिर में बाल ही न हो। और मेरी वह आशा अब पूरी हो गई।

० ० ०

अकबर—"बीरबल, मैंने सुना है कि तेरी स्त्री निहायत खूबसूरत है।"

बीरबल—"जहांपनाह, मुझे भी इसपर गर्व था, लेकिन बेगम साहिबा को देखकर मैं उसे बिलकुल भूल गया हूं।"

० ० ०

"पिता—"बेटा, आज तुमने कुछ खाया नहीं!"

पुत्र—"खाया क्यों नहीं? अभी तो मां से मार खाकर आ रहा हूं।"

० ० ०

छोटा लड़का—"पिताजी, आप सोते समय भी चश्मा क्यों पहने रहते हैं?"

पिता—"इसलिए कि मैं सपनों को साफ-साफ देख सकूं।"

० ० ०

चार-दोस्त थे। एक गूंगा और बहरा था, दूसरा अंधा, तीसरा लंगड़ा और चौथा नंगा। चारों कहीं की यात्रा कर रहे थे। रास्ते में एकाएक गूंगा और बहरा बोल उठा, यारो! "कुछ आवाज आ रही है।"

अंधा—"देखते नहीं, शायद डाकू आ रहे हैं।"

० ० ०

एक राजा ने एक ज्योतिषी से अप्रसन्न होकर फाँसी की सजा सुना दी।

एक मित्र ने ज्योतिषी से पूछा, "क्या आपको अपना भविष्य मालूम था?"

ज्योतिषी बोला, "ग्रहों के अनुसार तो मरने के समय मुझे कोई उच्च स्थान प्राप्त होना चाहिए था। परन्तु यह मुझे कैसे ज्ञात होता कि वह ऊंचाई फाँसी के तख्ते की ऊंचाई है।"

'पत्नीव्रत'

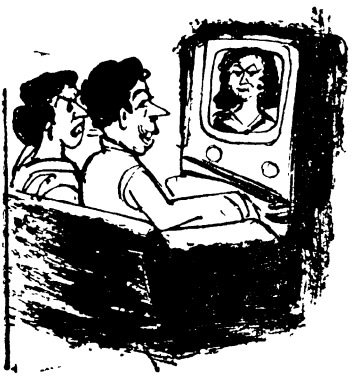

पत्नि पति से—यह तुम्हारी कैसी चाल है कि किसी सुन्दरी का चित्र देखते ही तुम मेरा हाथ छोड़ने लगते हो।

"सुना है तुम्हारा कुत्ता खो गया है। समाचार-पत्र में विज्ञापन क्यों नहीं छपा देते, कुत्ता मिल जायगा।"

विज्ञापन कराने से क्या लाभ? कुत्ता तो अखबार पढ़ेगा नहीं।"

० ० ०

युवक ने कहा—"साहब मुझे नौकरी चाहिए। मैं बहुत ईमानदार हूं।"

साहब ने पूछा—"तुम्हारी ईमानदारी का सबूत?"

युवक बोला—"मैं थाने की रिपोर्ट आपको दिखा सकता हूं, जिसके अनुसार मैं दस बार चोरी के मामले में पकड़ा गया, पर बार-बार छूट गया।"

वकील— "जिस समय लूट हो रही थी उस समय तुम कहाँ थे?"

अपराधी—"अपने दो साथियों के साथ बातें कर रहा था।"

वकील —" शायद वे लुटेरे हों?"

अपराधी— " जी हाँ, दोनों वकील हैं।"

० ० ०

जब आस्कर वाइल्ड दुनिया के भ्रमण के सिलसिले में पहली बार न्यूयार्क पहुंचे तो वहां के पदाधिकारियों ने उनसे पूछा—आपको किसी चीज की घोषणा करनी है?

'नहीं तो। केवल अपनी प्रतिभा दिखानी है।' उन्होंने उत्तर दिया।

० ० ०

एक विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि शिक्षक समाज के बहुत बड़े सेवक हैं। उन्होंने निष्कर्ष में यह कहा—'ये हमारे शिक्षक चिरंजीवी हों।'

दो मिनट तक सभा में पूरी स्तब्धता रही। फिर पीछे की पंक्ति से प्रश्न आया—'लेकिन क्या खाकर?'

"घोड़ा बनाम जिराफ़ !"

अरे भाई, गदहे को रात दिन खरहरा देकर अगर घोड़ा बनाया जा सकता है तो फिर घोड़े को मालिश के द्वारा जिराफ़ क्यों नहीं बनाया जा सकता है ?"

एक हलवाई ने साईनबोर्ड लगाया—"तीन सौ बरस पुरानी मिठाई की दूकान।"

तब सामनेवाले हलवाई ने यह साईनबोर्ड लगाया—
"रोज-ब-रोज की ताजी मिठाई की दूकान।"

० ० ०

मालिक (नौकर से)—"गधा! दिन भर कहां रहता है?"
नौकर—"धोबी के घर में।

मालिक—(क्रोध से)—"कैसा बोलता है!"
नौकर—"चीपों! चीपों!"

० ० ०

पुलिस—"पार्क में कुत्तों को लाना मना है। यह कुत्ता आपका है?"
सज्जन—"नहीं, मेरा नहीं है।"
पुलिस—लेकिन यह तो आप ही के पीछे-पीछे आ रहा है!"
सज्जन—"मेरे पीछे-पीछे तो आप भी आ रहे हैं।"

० ० ०

शिक्षक—"अच्छा, बताओ तो मोहन, हाथी कहां पाया जाता है?"
मोहन—गुरुजी, हाथी इतना बड़ा जानवर है कि वह कभी खोता ही नहीं।"

० ० ०

प्रश्न—"तुम्हारे मित्र बिल्कुल चुप क्यों हैं?"
ऊत्तर—"उन्हें थूक फेंकने के लिए पीकदान नहीं मिल रहा है।"
प्रश्न—"अगर दुनिया में मौत न होती तो?"
उत्तर—लोग बे-मौत मर जाते!"

० ० ०

अकबर—वीरबल, सबसे उत्तम पानी किस नदी का है?
वीरबल—"जमुना का।"
अकबर—"और गंगाजल की जो इतनी तारीफ होती है?"
बीरबल—जहांपनाह, गंगाजल तो अमृत है, पानी नहीं।"

"स्मरण-शक्ति !"

मेरी स्मरण शक्ति बड़ी विमल है, भाई। केवल तीन चीज मुझे याद रहती है—लोग का नाम, उसका चेहरा,....और—"

"और ?"

"वही तो याद नहीं पड़ता है !"

एक ग्वाला दूध में पानी मिलाकर बेंचता था, एक ग्राहक ने पतला दूध देखकर कहा—"तुम्हारा दूध बहुत पतला है, मालूम पड़ता है तुम इसमें पानी मिलाकर बेंचते हो ?"

ग्वाला—"आजकल भैसों पर ओस पड़ा करती है, इसी कारण दूध पतला होता है। और कोई कारण नहीं है।"

० ० ०

एक कंजूस ने एकबार अपने नौकर को इनाम देने का वादा किया, पर काम हो जाने पर नौकर को कुछ नहीं दिया। बल्कि जब नौकर उसके सामने जाता तो वह मुंह फेर लेता।

एक बार कंजूस कहीं जा रहा था, वह नौकर भी उसके साथ था। उसने रास्ते में एक ऊंट देखकर नौकर से पूछा—"यह ऊंट गर्दन क्यों टेढ़ी किये है ?"

नौकर बोला—"सरकार" ! इसने भी किसी को इनाम देने का वादा किया होगा।

मालिक ने उस दिन घर आकर नौकर को इनाम दे दिया।

० ०

एक बार एक अभागा भिखारी किसी तरह एक अमीर के घर में जा घुसा और बातें बनाकर अपने दुख की कहानी सुनाने लगा। उसने इस ढंग से कहानी कही कि उस अमीर की आंखों में भी आंसू आये और रोनी सूरत में उसने अपने नौकर को बुलाया। भिखारी को आशा बंधी कि अब कुछ मिलेगा पर जब नौकर भीतर आया तो अमीर ने कहा—"बल-चनमा ! इस आदमी को बाहर निकाल दो, इसने तो मुझको रुला डाला।"

० ० ०

एक छोटे लड़के की जूतियां खो गईं, घर भर ढूंढ़ डालने पर भी जब कहीं पता न लगा, तो वह पिता के पुस्तकालय में जाकर एक शब्दकोश के पन्ने उलटने लगा, पिता ने उससे पूछा—"क्यों श्यामू, उसमें क्या खोज रहे हो ?"

श्यामू—"पिता जी ! मैं अपनी जूती खोज रहा हूं।"

पिता (हंसकर) "अरे मूर्ख ! उस पुस्तक में कहीं जूती मिलेगी ?"

श्यामू—"पर आप तो हर चीज इसी में खोजते हैं।"

"पता नहीं....!"

पत्नि : "क्या आगे से ही कमरा रिजर्व नहीं करा सकते थे ?"

पति : "करा तो सकता था, लेकिन मालूम भी तो होता कि कहा जा रहा हूं।"

सेठ—"कभी मुझे बड़ा आलस मालूम पड़ता है और कभी सिर में चक्कर भी आते हैं, कभी एक के दो दिखाई पड़ते हैं।"

डाक्टर—"दवा लेने के बदले अपनी गिन्नियां गिनने बैठ जाया करो, ये सब शिकायतें दूर हो जायेंगी।"

० ० ०

महिला—(एक राजनीतिज्ञ से एक भोज में)-"मैंने आपके बारे में बहुत सुना है।"

राजनीतिज्ञ (अन्यमनस्क भाव से)—"हो सकता है, लेकिन आप उसे साबित नहीं कर सकतीं।"

० ० ०

एक हबसी की कब्र पर लिखा हुआ था, "गोरों के लिए पीलों से लड़ते-लड़ते जान देनेवाला एक काला आदमी।"

० ० ०

किसी अमेरिकन ने कृष्णमेनन से पूछा—

"क्या यह सच है कि नेहरू अपने सिर के बल खड़े होते हैं?"

"मैं सिर्फ यह जानता हूं कि मैं अपने सिर के बल खड़ा नहीं हो सकता।"

० ० ०

एक विदेशी—"जब मैं इंडिया में था तो छड़ियों को सांप समझता था।"

दूसरा—"कोई हानि नहीं।"

पहला—"लेकिन मैं उन्हें मारने के लिए सांपों को उठा लिया करता था।"

० ० ०

मकान—मालिक—"मुझे इस बात की खुशी है कि अब आप पलस्तर गिरने की शिकायत नहीं करते।"

किरायेदार—"क्योंकि जो रहा-सहा था वह भी कभी को गिर चुका।"

"दूसरों का कष्ट !"

"लोगों के दुःख को दूर करते-करते ही मैं मरा, फिर आपलोगों के कष्ट को मैं कैसे देख सकता हूं। मेरे शव को ढोने में अगर आप-लोगों का कन्धा दुखता है, तो साइकिल रिक्शा पर ही मुझे श्मशान ले चलिये, भाई !"

माँ - "क्यों रे गणेश, तुम सारी मिठाई खा गये!"

गणेश—" माँ, तूने ही तो कहा था कि उसे ऐसी जगह रखना जहाँ चूहे न खा जायें।"

० ० ०

पिता—"तुम्हें बिल्ली की पूंछ नहीं खींचनी चाहिए।"

मीनू—" मैं तो पूंछ को सिर्फ पकड़े हुए हूं, खींच तो बिल्ली रही है।"

० ० ०

" सड़क पर यह लाल बत्ती क्यों है।"

" इसलिए कि आने-जानेवालों को पत्थरों का ढेर दिखाई दे सके।"

" और सड़क पर यह यह पत्थरों का ढेर क्यों है?"

" लाल बत्ती रखने के लिए।"

० ० ०

" पांच मिनट समय दीजिए, महाशय?"

" जरूर, लेकिन जो कुछ कहना हो उसे संक्षेप में कहें, दूसरों के लिए मेरे पास समय बहुत ही कम है।"

"जी हां, इसलिए मैं आया हूं। मेरे पास बड़ा सुन्दर 'शब्दकोष' है। उसकी एक प्रति आप जरूर खरीद लें, वह आपके बड़े काम का है।"

० ० ०

मैनेजर—" मिस्टर श्याम, अब ग्राहक की क्या शिकायत है?"

क्लर्क—"शिकायत तो साहब कुछ नहीं है ये ऐसे दो जूते चाहते हैं जो एक आवाज में बोलें।"

० ० ०

एक जूते की दूकान के नौकर ने एक ग्राहक को जूते दिखाये। जूता ग्राहक को पसंद आ गया। लेकिन उसके पास पैसे कुछ कम थे। इसलिए उसने कहा कि मैं कल बाकी पैसे दे दूंगा। नौकर ने स्वीकार कर लिया और जूते दे दिये। तब दूकान के मालिक ने उससे - पूछा—तूने जूते दे दिये और कल वह पैसे नहीं देने आये तो?"

नौकर ने कहा—" आयगा क्यों नहीं। मैंने एक ही पैर के दो जूते बांध दिये हैं।"

"प्रदर्शन !"

"अन्त में अगर घूस लेना ही है, तो बेकार क्यों अपने सतीपन का प्रदर्शन कर रहे हैं, सिपाही जी ! आपका भी समय बर्बाद हो रहा है, और पैदल चलने में मुझे भी कष्ट हो रहा है !"

शिक्षक ने मोहन से पूछा, "बड़े होकर तुम क्या करोगे ?"

मोहन—"ट्रक-ड्राइवर बनूंगा।"

शिक्षक—"ऐसा क्यों ? आखिर ट्रक-ड्राइवर ही क्यों बनना चाहते हो ?"

मोहन—"मैं बारिश में लोगों पर खूब छींटे उछालूंगा।"

० ० ०

एक देहाती दिल्ली पहुंचा। वहां उसने एक नाई से पूछा, "हजामत का कितना लेता है रे ?"

नाई—"जैसी हजामत। इकन्नी से अठन्नी तक।"

देहाती—"अच्छा, एक ही आनेवाली हजामत बना।" नाई ने उस्तरे से उसका सिर घोटकर रख दिया।

देहाती—"अच्छा अब दो आने वाली बना।"

नाई—"लो बन गई। लाओ पैसे (उस्तूरे को उलटकर हजामत बनाने का स्वांग बनाता है।)

देहाती—(तमतमाकर) "अबें घबराता क्यों है, अभी तो आठ आनेवाली तक बनवाऊंगा।"

० ० ०

देहाती—"राम, राम! कहां चले दादा ?"

डाकिया—"उस गाँव में अखबार देने जारहा हूं।"

देहाती—"इसके लिए इतनी तकलीफ क्यों करते हो ? डाक से भेज दो न !"

० ० ०

मजिस्ट्रेट—"उसको जरा भी पता न लगा; तुमने उसके पाकिट से नोट कैसे गायब कर दिये ?"

अपराधी—"यह सारी क्रिया सिखाने के लिए मैं पाँच रुपये फीस लेता हूं।"

"पेशा !"

हाकिम—"तुम्हारा नाम ?"

गवाह—"सत्यवादी सिंह ।"

हाकिम—पेशा ?

गवाह—"वह वह तो मेरे नाम के बीच ही छिपा है ,हुजूर, गवाह देना ही हमारा पेशा है ।"

एक बार एक हब्शी ने रास्ते में एक आईना पड़ा पाया, उठाकर उसमें देखा तो उसमें उसको अपनी बुरी सूरत दिखलाई पड़ी। उसने आईना यह कहकर फेंक दिया—"ऐसी भद्दी सूरत है,भी तो यहां तुझे कोई फेंक गया है।"

० ० ०

एक कंजूस जब भोजन करने बैठता था तो आईना सामने रख लेता था। एक दिन किसी ने इसका कारण पूछा तो वह बोला, "इस प्रकार मेरा खाना दूना हो जाता है। एक थाल क दो थाल हो जाते हैं।"

० ० ०

मालिक (एक मूर्ख नौकर से) —"बाजार से बैंगन खरीद लाना।"

नौकर सोचने लगा, बैंगन क्या है ? कैसा होता है ? आखिर उसने पूछा —"सरकार ! कैसा बैंगन लाऊं।"

मालिक—"जो रंग में काला और जड़ के पास थोड़ा हरा होता है।"

नौकर बाजार जाते समय राह में एक आदमी को, जिसका रंग काला था और जो हरा साफा बांधे हुए था, पकड़ कर कहा—"चलो आज मालिक तुम्हारा भर्ता बनावेंगे।

० ० ०

लड़का—"अच्छा कहो तो माँ, तूने कभी सर्कस में भी काम किया है ?"

माँ—"नहीं तो बेटा !"

लड़का—"तो फिर पड़ोसी ऐसा क्यों कहते हैं कि तुम पिताजी को उंगलियों पर नचाती हो ?"

० ० ०

माँ—"क्यों रे मोहन, महेश क्यों रो रहा है ?"

मोहन—"मां, मैं अपनी मिठाई खा रहा हूं तो वह रोता है।"

माँ—"क्या उसकी मिठाई खतम हो गई ?"

मोहन—"हाँ, जब मैं उसको खाता था तब भी वह रोता था।"

"जवाबदेही !"

"देखो जी दसखत तो मैं कर देता हूं—लेकिन धोखा-फरेब के लिए जवाबदेह तुम होगे !"

विनोद के दाहिने हाथ की उंगलियां कहां गईं ?"

"घोड़े के दांत गिनने के लिए उसने उसके मुंह में हाथ डाला...."

"फिर क्या बात हुई ?"

घोड़े ने यह जानने के लिए अपना मुंह बंद कर लिया कि उसके हाथ में कितनी उंगलियां हैं।"

० ० ०

एक बीमार बालक की मां ने बालक को कुनैन की गोली देनी चाही, पर उसने नहीं खायी, तब मां ने कुनैन की गोली पेड़े के बीच में रख दी और कहा, "लो बेटा, पेड़ा खा लो !"

बालक ने पेड़ा खा लिया। थोड़ी देर बाद मां ने पूछा, "बेटा, पेड़ा खा लिया ?"

पुत्र—"हां मां, पेड़ा खा लिया, पर पेड़े को गुठली फेंक दी।"

० ० ०

पहला—"मेरे बाप का एक बड़ा अस्तबल था। लम्बा इतना जैसे बम्बई से कलकत्ता। चौड़ा इतना जैसे दिल्ली से मद्रास।"

दूसरा—"और हमारे बाप के पास इतना ऊंचा भाला था कि जिससे वह आसमान को छेद-छेद कर जब चाहे पानी बरसा लेते थे।

पहला—"पर वह इतने बड़े भाले को रखते कहां होंगे ?"

दूसरा—"तुम्हारे बाप के अस्तबल में।"

० ० ०

एक किसान गाड़ी लिये किसी पागलखाने के पास से गुजर रहा था। खिड़की में से एक पागल बोला, "क्या लिये जा रहे हो ?"

"खाद।"

'क्या करोगे ?"

"फलों में लगाऊंगा।"

"हम तो फलों में मलाई लगाते हैं। और फिर भी लोग कहते हैं कि हम पागल हैं।"

"केवल भाषण !"

"इस दुनिया में सभी लोग काम करने आए हैं, भाई !"
"लेकिन क्या केवल भाषण देना जीवन का सबसे बड़ा कर्त्तव्य नहीं है, नेताजी ?"

G.H.3107

सेठ—" तुम पत्थर कितना बड़ा उठा सकते हो ?"

देहाती—" एक मन का।"

सेठ—"और कपास कितनी उठा सकते हो ?"

देहाती—"कपास की क्या बात, मैं उसे दस मन भी उठा ले सकता हूं।"

० ०

एक अदालत में एक गवाह गवाही देने ही वाला था। जज ने उसे मंद-मति का जानकर सचेत किया,

" जानते हो शपथ लेने का क्या मतलब है ?"

" जी हाँ," गवाह बोला, " इसके मानी हैं कि अगर मैं झूठ बोलूं तो उसपर डटा रहूं, चाहे जो कुछ हो।"

० ० ०

पत्नी :—मैंने अपने कानों से सुना कि आप बाथरूम में कल अपने आप से बातें कर रहे थे। यह बड़ी बुरी आदत है।"

पति—मैं अपने आपसे तो बातें नहीं कर रहा था। हाँ, मैं साबुन से फिसल गया था और उसी से बातें कर रहा था।

० ० ०

मूर्ख—(मित्र से) "यार ! मैंने सुना था कि तुम मर गये।"

मित्र—" पर मैं तो तुम्हारे सामने जिन्दा खड़ा हूं।"

मूर्ख—"लेकिन मैंने जिससे सुना था वह भी विश्वासी आदमी है।"

० ० ०

एक अफीमची किसी गड्ढे में गिर गया। संयोगवश उसी गड्ढे में एक बनिया भी जा गिरा। अफीमची ने पूछा—तुम कौन हो जी ?

बनिया—मैं बनिया हूं।

अफीमची—थोड़ा गुड़ हो तो मुझे दे दो। मैं खाऊंगा

"मंत्रीजी का रोना !"

"अफसोस है, वनमहोत्सव के अवसर पर मेरे हाथ से लगाए गए ये पौधे भी मुरझा रहे हैं !"

"जनाब, आपके वह हाथी के दाँत के गहने सब नकली निकले।"

"मुझे लगता है, उस हाथी के दाँत ही नकली रहे होंगे। "

० ० ०

राम—"पता चला है कि तुम अमेरिका जा रहे हो! मालूम है जब यहाँ दिन होता है तब वहाँ रात होती है?"

मोहन—"पहले पहल तो बड़ा अचरज लगेगा।"

० ० ०

"यहां लंगोट पहनकर आना बड़ी बुरी बात है।"

"और बिना लंगोट पहने आना?"

० ० ०

एक महाशय संस्कृत, हिन्दी या ब्रजभाषा के अलावा किसी और भाषा का एक शब्द भी नहीं बोलते थे। कड़ा नियम था। किसी से बातचीत के सिलसिले में बंदूक का प्रसंग आया। उन्होंने बंदूक चलाने का बयान यों दिया—

"लौह—नलिका में श्याम चूर्ण प्रवेश करिके—अग्नि दीनो तो भड़ाम शब्द भयौ।"

० ० ०

"मोटे आदमी अक्सर स्वभाव के अच्छे होते हैं, क्यों?"

"क्योंकि वे न दौड़ सकते हैं न लड़ ही सकते हैं।"

० ० ०

"मैं अब कभी शर्त नहीं लगाऊंगा।"

"अरे, तुम्हारी लत नहीं छूट सकती।"

"छूट सकती है। आओ शर्त लगाओ।"

० ० ०

शिक्षक—"चीन में और देशों की अपेक्षा किस चीज की पैदावार अधिक होती है?"

छात्र—"चीनियों की।"

पन्द्रह नये पैसे !"

"पार्टी यह जानना चाहता है सेठ जी, कि बारह रुपये प्रति सैकड़ा सूद लेने पर भी आपने पन्द्रह नये पैसे और अधिक क्यों लिये ?"

"अच्छा तो वह बात आपकी समझ में नहीं आई ! -- उनलोगों ने आपत्ति का जो पत्र लिखा था उसके जवाब भेजने में भी तो कुछ खर्च बैठा था !"

पुस्तक-विक्रेता—"यह वह किताब है जो तुम्हारा आधा काम कर देगी।"

छात्र—"वाह वा! तब मुझे इसकी दो प्रतियां दे दें।

० ० ०

दरोगा—"क्या उस आदमी को बड़ी चोट लगी है?"

पुलिस—"सिर्फ दो चोटें ही खतरनाक हैं जिनके कारण वह बच नहीं सकता। बाकी सब मामूली चोटें हैं, उनसे डरने की कोई बात नहीं।

० ० ०

किसी ने पत्र-द्वारा गांधीजी से पूछा—

"हम तीन मन का शरीर लेकर धरती पर चलते हैं, इससे न मालूम कितने जीव-जन्तु मर जाते हैं, इस हिंसा को किस तरह रोका जाय?"

वल्लभ भाई ने तुरत कहा, "इसे लिख दो कि पैरों को सिर पर रखकर चले।"

० ० ०

एक बार एक बालक गांधीजी का हाथ पकड़ कर चल रहा था। उस समय एक कुत्ता वहां से गुजरा। लड़का बोल उठा, "देखो बापू! कुत्ते को पूंछ है!"

"अच्छा, कुत्ते को पूंछ है? क्या तेरे भी पूंछ है?"—बापू ने कहा। बच्चा हंस पड़ा—"बापू! इतने बड़े होकर तुम इतना भी नहीं जानते कि आदमी के पूंछ नहीं होती, तुम्हें तो कुछ भी नहीं आता।"

० ० ०

दो मित्र एक दिन मिले, पहले ने दूसरे से कहा, "कमाल है! पहले तो मुझे लगा कि तू है। पर अब देखता हूं कि तू नहीं तेरा भाई है।

० ० ०

एक घोड़ा-गाड़ी वाले ने अपने घोड़े को हरा चश्मा पहना रखा था, किसी ने पूछा—इसे हरा चश्मा क्यों पहनाया है?"

घोड़ा-गाड़ीवाला बोला,—"घास सूखी है, हरे चश्मे से इसे हरी दीखे, इसलिए।"

"प्रैक्टिस !"

"लोहा के सन्दूक को तोड़ना तुमने किस तरह सीखा ?"—जेल-अध्यक्ष ने कैदी से पूछा ।

हजूर—"बाल्यावस्था से ही मैंने इसका अभ्यास किया है—बिस्कुट-डिब्बे के ढक्कन को खोलते-खोलते ही मुझे इसका अभ्यास हो गया ।"

"तुम सड़क पर चलते समय पेंसिल और नोट बुक क्यों लिये रहते हो ?"

"इसलिए कि अगर किसी मोटर के नीचे दब जाऊं तो फौरन उसका नम्बर नोट कर सकूं।"

० ० ०

"वह यहां दिन भर बैठा-बैठा समय बर्बाद करता रहा।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"मैं उसे लगातार देखता रहा हूं।"

० ० ०

राम—"श्याम तो पूरा चार सौ बीस निकला।"

मोहन—"अरे भाई, वह इतना जाल साज है कि उससे हाथ मिलाने के बाद मैं हमेशा अपनी उंगलियों को गिन लेता हूं!"

० ० ०

मिस्त्री—"आपकी कार को देखकर मेरी राय तो है कि आप इसे चलाते रहें।"

मोटर का मालिक—'क्यों ?'

मिस्त्री—'क्योंकि यदि कहीं भी इसे आपने रोक दी तो वे गधे सिपाही समझेंगे कि कोई दुर्घटना हो गई है।'

० ० ०

एक नया वकील अपने मुवक्किल को, जिसके ऊपर ६ गधों को मारने का अभियोग था, बचाने का प्रयत्न कर रहा था। जूरी के १२ सदस्य उसका भाषण सुन रहे थे।

वकील कह रहा था—छः गधे, महाशय, ६ गधे! जूरी-बाक्स में आप जितने हैं, उसके आधे.....!"

० ० ०

"तुम घटनास्थल से कितनी दूर थे ?" वकील ने पूछा।

"ठीक बीस फूट साढे छः इंच।"

इस उत्तर से वकील चकरा गया। "तुम्हें इतना ठीक फासला कैसे मालूम हुआ ?"

"मैंने तभी सोच लिया था कि कोई न कोई मूर्ख मुझसे ऐसा सवाल जरूर पूछेगा, इसलिए मैंने तभी फासला नाप लिया था।

"महा मुश्किल !"

"तुम्हारे बड़े बाबू की क्या खबर है ?"

"क्या कहें, समय का तो जरा भी ज्ञान उन्हें नहीं है, जिस दिन मैं जरा पहले ही आफिस पहुंचता हूं तो उनकी कुर्सी खाली दिखाई पड़ती है और जिस दिन जरा देर से पहुंचता हूं तो देखता हूं कि वह अपनी कुर्सी पर विराजमान हैं।"

सोहन—"दुनिया में पैसा ही सब कुछ नहीं है।"

मोहन—"मैं जानता हूं कि बहुत सी चोजें ऐसी हैं जो कि पैसे से भी अधिक कीमती हैं, लेकिन उन्हें खरीदने के लिए आपके पास पैसा चाहिए।"

० ० ०

एक मौलवी साहब पहले-पहल सिनेमा देखने गये। एक दृश्य में एक विशाल हाथी आता हुआ दिखाई पड़ा। मौलवी साहब उसे देखकर डर गये। पास बैठा हुआ दर्शक बोला, "यह तो सिनेमा है, आप डरते क्यों हैं ?"

"भाई मैं तो जानता हूं कि यह सिनेमा है, पर वह हाथी तो नहीं जानता !" मौलवी साहब ने कहा।

० ० ०

दो आदमी बैठे गप्पें लगा रहे थे। कहने को कुछ बाकी नहीं रहा था, इसलिए एक बोला—"आज मौसम कैसा है ?"

दूसरा —"मैं नहीं कह सकता, आज मेरे यहां अखबार नहीं आया।"

० ० ०

अकबर—"बीरबल ! जिस लफ्ज के आखिर में 'बान लगा रहता है अक्सर उस नाम वाले आदमी बड़े दुष्ट होते हैं, जैसे—पीलवान, गाड़ीवान दरबान,.....।"

बीरबल—"हां मेहरबान।"

० ० ०

एक दिन अकबर खिजाब लगाते समय बीरबल से बोला, "क्यों बीरबल, खिजाब लगाने से दिमाग को कोई हानि तो नहीं पहुंचती ?"

बीरबल—"हुजूर, खिजाब लगाने वाले को दिमाग ही कहां रहता है ? अगर दिमाग रहता तो वे बूढ़े से जबान बनने की कोशिश ही नहीं करते।'

० ० ०

एक आदमी जिन्दगी से निराश होकर आत्महत्या करने की सोची। कमरे में उसका एक दोस्त आया तो देखता है कि हजरत कमर में रस्सी बांधे खड़े हैं।

"यह क्या बात है ?"

"फांसी लगा रहा हूं।"

"तो रस्सी कमर में क्यों बांधी है ?"

"क्योंकि गले में बांधने से दम घुटता था ?"

"पिता की नकल !"

"वाह, वाह ! पिताजी का 'टेस्ट' कितना फाइन है !"

प्रशंसक—(नवविवाहिता पत्नी से)-"आपकी पोशाक तो एक कविता है!"

लेखक पति—"एक कविताएं नहीं, सोलह कविता पाँच छोटी कहानियाँ और नौ लेख।"

० ० ०

स्त्री—(रोष से) "पुरुषों के तो दिमाग ही नहीं होता। उनसे कोई बात कहो तो एक कान से अंदर जाती है, दूसरे से बाहर निकल आती है।"

पुरुष—"होता होगा ऐसा, लेकिन अगर स्त्री से कोई बात कहो तो वह दोनों कानों में जाती है और मुंह से निकल जाती है।"

० ० ०

काहिल—(आराम कुर्सी से)-"बेटा, देख तो बाहर पानी तो नहीं बरस रहा है ?"

लड़का—(पलंग पर लेटे-लेटे)-नहीं बरस रहा।"

काहिल—"यह पड़े-पड़े तूने कैसे जान लिया ?"

लड़का—"मैंने अभी बाहर से आती हुई बिल्ली को देखा। वह भींगी नहीं थी।"

० ० ०

सिपाही की पत्नी—'देखो घर में चोर घुसा है। सामान ले जा रहा है। गिरफ्तार करो!"

सिपाही—"मैं मैं....मैं... तो अभी ड्यूटी पर नहीं हूं।"

० ० ०

एक भुलक्कड़ ने एक दिन डाक्टर दोस्त को टेलीफोन करके बुलाया। गपशप करने के पश्चात् डाक्टर उठ खड़ा हुआ और चलते हुए बोला, "कहो दोस्त! भाभी तो मजे में हैं।" तब उस भुलक्कड़ को ख्याल आया और वह घबराकर बोला, "अरे, वह तो छत से गिर पड़ी है और तभी से बेहोश है।"

० ० ०

रिपोर्टर—आप किस चीज पर खोज कर रहे हैं।

दार्शनिक—मेज पर अपने चश्मे को।

"नगदा-नगद!"

जज—(अपराधी से) "ढाई रुपये पाकेटमारी करने के अपराध में तुमको दश रुपये जुर्माना किया जाता है।"

अपराधी—"ठीक है, हुजूर, बाकी साढ़े सात रुपये अभी फौरन ही पाकेट मारकर ला देता हूं।"

पति (शिकारी की शेखी बघारते हुए)—"आज तो यह तय था कि या तो शेर मरेगा या मैं !'

पत्नी—"मुझे खुशी है कि शेर ही मरा, वर्ना हमें ऐसी बढ़िया खाल कहां मिलती !"

० ० ०

सेठानी—"तुमने मेरी होरे की अंगूठी देखी ?"

पड़ोसिन—"हां, जब तुमने गांधी-फंड में एक पैसा डाला था उस वक्त देखी थी।"

० ० ०

"क्या तुम अपने सर पर खड़ा हो सकते हो ?'

"नहीं, बहुत ऊंचा है।"

० ० ०

आज क्या तारीख़ ह ?"

"ला तेरे अख़बार से देखकर बताऊं ।"

"कुछ लाभ नहीं, यह अख़बार तो कल का है।"

० ० ०

मुसाफिर—"उन लोगों ने स्टेशन को शहर से इतनी दूर क्यों बनाया ?"

रेलवे अधिकारी—"क्योंकि वे उसे रेलवे लाइन्स के पास बनाना चाहते थे।'

० ० ०

एक घड़ीसाज टावर की घड़ी को ठीक करके ऊपर से उतरा तो किसी ने पूछा, "क्यों साहब, क्या घड़ी में कुछ खराबी थी ?"

घड़ीसाज—"जी नहीं, मुझे दीखता कुछ कम है, टाइम देखने के लिए चढ़ा था।"

० ० ०

"रात मैंने सपने में देखा कि एक नये किस्म का नाश्ता आया है और मैं उसे चख रहा हूं।"

"फिर क्या हुआ ?"

"आंख खुलने पर देखता हूं कि गद्दे का एक कोना गायब है।"

"अनुरोध !"

"भाई डकैत ! सभी चीजों के साथ-साथ बैंक का हिसाब-किताब बही भी लेते जाओ—जिससे हिसाब-किताब की गड़बड़ी का हमारा पाप भी धुल जाय।"

ग्राहक—"कोई बढ़िया इत्र दिखलाइये, मुझे इसे एक उपहार में देना है।"

दूकानदार—"यह लीजिए। इसका नाम है 'शायद'। सौ रुपये तोले का है।"

ग्राहक—"सौ रुपये तोले का ? मुझे 'शायद' नहीं, 'शर्तिया' चाहिए।"

० ० ०

मुसाफिर—"कुली ! कुली ! मेरा असबाब कहां है ?"

कुली—"आपका असबाब आपसे ज्यादा अक्लमंद है। आप गलत गाड़ी में आ गये हैं !"

० ० ०

एक महाशय चुप्पा प्रकृति के थे, बहुत कम बोलते थे, एक बार रेल में सफर कर रहे थे, उनके डब्बे में एक और सज्जन थे। उनको इस तरह बराबर चुप देखकर उन्हें छेड़ने की नीयत से वे बोले—"भाई साहब आपकी टाई हवा में उड़ रही है।" इसपर चुप्पा जी क्रोध में आकर बोले, "मेरी टाई हवा में उड़ रही है, इससे आपको मतलब ? आपका कोट आपकी सिगरेट से जलता रहा, मैं बोलने गया था ?"

० ० ०

दो देहाती पहले-पहल रेल में सफर कर रहे थे। उन्होंने सोडावाटर का नाम सुना था, पर अभी तक पीकर नहीं देखा था। उन्होंने बेचने वाले से एक-एक बोतल खरीदी।

उनमें से एक बोतल को मुंह से लगाकर बड़ी-बड़ी घूंट मारने लगा। संयोग से गाड़ी उसी समय एक सुरंग में पैठी।

"क्या जी, कैसा है ?"—साथी ने पूछा।

"छूना मत इस बेकार चीज को ! इसने तो मुझे अंधा बना दिया था !"

० ० ०

एक मूर्ख घोड़े पर सवार था और घास का बोझ अपने सिर पर रक्खे हुए था। किसी ने कहा—"अरे ! घास भी घोड़े की पीठ पर रख लो।"

मूर्ख बोला—"वाह जी वाह, इस तरह घोड़े पर बोझा ज्यादा न हो जायगा। यह अपना खास घोड़ा है, कोई भाड़े का टट्टू नहीं।"

"बदमाश घोड़ा !"

"आपने घोड़े का मुंह इस तरह क्यों बांध रखा था—भाई !"
"खरीदते समय हो सकता था कि आप जो-सो दाम कहें और उस सबको सुनकर कहीं घोड़ा हंसकर आपका अपमान न कर बैठे.....इसीलिए..... !"

मुजरिम "हुजूर, मैंने सच बोलने की कसम खाई है, पर ज्यों ही मैं सच बोलने की कोशिश करता हूं, कोई-न-कोई वकील मुझे बीच में ही टोक देता है।"

मजिस्ट्रेट—"तुम अपने को अपराधी मानते हो या निर्दोष ?"

मुजरिम—"इसका उत्तर दे सकना बड़ा मुश्किल है ! यही तो मुझे भी जानना है।"

० ० ०

राजनीतिक वक्ता—"मैं जो कुछ हूं, इसके लिए अपनी माता का ऋणी हूं।

भीड़ में से एक आवाज—"तुम उसे आठ आने पैसे भेजकर हिसाब साफ क्यों नहीं कर लेते ?"

० ० ०

जिन्ना साहब एक बार लाहौर का पागलखाना देखने गये। भटकता हुआ एक पागल सामने आकर बोला-"अबे ! कौन है तू ?"

जिन्ना—"मैं हूं पाकिस्तान का गवर्नर जनरल, मुहम्मद अली जिन्ना।'

पागल—"मैं जब यहां आया तो नेपोलियन बोनापार्ट था। पर घबराओ मत, तुझे ये लोग सुधार देंगे।"

० ० ०

शिक्षक—"वह कौन सी चीज है जो आज से सौ वर्ष पहले दुनिया में नहीं थी, पर आज है ?"

छात्र—"साहब, आप। सौ वर्ष पहले आप दुनिया में नहीं थे, पर आज हैं।"

० ० ०

परीक्षा—हॉल में जाते समय एक विद्यार्थी ने अपने अध्यापक से पूछा "आज क्या तारीख है, सर ?"

"तारीख—वारीख की चिन्ता मत करो। इम्तहान की सोचो।"

"सर, मैं अपनी परीक्षा की कापी में एक बात तो सही लिखना ही चाहता हूं।"

"इस्माइल प्लीज !"

फोटोग्राफर—"जरा मुस्कराइये, चेहरे पर उदासी का भाव नहीं आने दीजिये।"

स्त्रेण स्वामी—"नहीं भाई, यह तो नहीं होगा। पत्नी अभी अपने बाप के घर हैं। उन्हीं को यह फोटो भेजना है, मेरे हंसी-खुशी भरे चेहरे को देखकर तो, वह समझेंगी कि मैं खूब मौज में हूं।"

कवि क्यों उसमें क्या दोष है ? क्या वह बहुत लंबी है ?"

संपादक—"हाँ, वह बहुत लंबी, बहुत चौड़ी और बहुत मोटी है।"

० ० ०

शिक्षक—"पृथ्वी कैसी है ?"

विद्यार्थी—"गोल !"

शिक्षक—"आखिर तूने कैसे जाना कि पृथ्वी गोल है ?"

विद्यार्थी—"अच्छा, चौकोर ही सही। मैं इस विषय में बहस करना पसंद नहीं करता।"

शिक्षक—"आदमी से मिलता-जुलता यदि कोई प्राणी है तो वह है बंदर।"

विद्यार्थी—एक और भी प्राणी है मास्टर साहब !"

शिक्षक—"वह कौन ?"

विद्यार्थी—"औरत।"

० ० ०

शिक्षक—"पदार्थों पर गर्मी का क्या प्रभाव पड़ता है ?"

विद्यार्थी—"गर्मी से चीजें बढ़ जाती हैं और ठंढ से सिकुड़ कर छोटी हो जाती हैं।"

शिक्षक—"उदाहरण दो।"

विद्यार्थी—"जैसे गर्मी में दिन बड़ा और जाड़े में छोटा हो जाता है।"

० ० ०

एक प्रोफेसर—"मेरे हाथ से अबतक हजार दो हजार विद्यार्थी निकल चुके होंगे.....।"

बिनोबा—"हजार-दो हजार विद्यार्थी निकल चुके सो तो ठीक है, पर उनमें कोई हाथ भी आया ?"

० ० ०

शिक्षक—"तुम्हें मालूम है कि ऊंट बिना पानी पिये आठ रोज तक चलता रहता है ?"

विद्यार्थी—"पी ले तो न मालूम कितना चले !"

"हिसाबी पत्नी !"

पत्नी—(सिनेमा हाल में) "क्या जी, तुम्हारा सीट आराम-दायक तो है ?"
पति—'हां' !
पत्नी—"पंखे की हवा शरीर पर अच्छी तरह लगती तो है ?"
पति—'जरूर'
पत्नि—" से भलिभांति दिखाई तो पड़ता है ?"
पति—"हां ।"
पत्नि—"फिर तब तो तुम मेरे सीट पर आ जाओ, मैं तुम्हारी जगह बैठूंगी

एक कवि बीमारी से उठे। डाक्टर ने सलाह दी,

"चार महीने तक आप किसी प्रकार का दिमागी काम न करें !"

कवि—"अच्छा, डाक्टर साहब कुछ कविता कर लूं तो क्या हर्ज है ?"

डाक्टर—"हाँ कविता करने के लिए कोई रोक नहीं है।"

० ० ०

संपादक—"मुझे इसके लिए खेद है कि आपकी कविता का प्रकाशन मैं नहीं कर रहा हूं।"

कवि—"क्या उसमें क्या दोष है ? क्या वह बहुत लंबी है ?"

संम्पादक—"हाँ, वह बहुत लंबी, बहुत चौड़ी और बहुत मोटी है।"

० ० ०

शिक्षक "गोपाल, आज तुम बहुत देर से आये।"

गोपाल—"साहब मैं गिर गया था।"

शिक्षक—"कहाँ से ?"

गोपाल—"चारपाई से।"

० ० ०

सरदार जी—"मुझे अपने लड़के के लिए जूता चाहिये।"

दूकानदा —"उसका नाप क्या है ?"

सरदार जी—नाप-वाप तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना जानता हूं कि वह टोपी बाईस इंची पहनता है।"

० ० ०

एक—"मैं चाहता हूं कि दुनिया की सभी सोने, चाँदी, हीरे-जवाहरातों की खानें खरीद लूं।"

दूसरा—"मगर मेरा इरादा अभी उन्हें बेचने का नहीं है।"

० ० ०

ग्राहक—"क्या यह कोट बिल्कुल ऊनी है ?"

दूकानदार—"मैं आप से झूठ नहीं कहूंगा। बिल्कुल ऊनी तो नहीं ही है, इसके बटन प्लास्टिक के हैं।"

० ०

एक हवाई जहाज जब काफी ऊंचाई पर चला गया, तो उसका ड्राइवर ठहाके लगाकर हंसने लगा। एक मुसाफिर ने पूछा, "क्या मजाक कर रहे हो, भाई ?"

ड्राइवर—"मैं यह सोच-सोचकर हंस रहा हूं कि जब पागलखाने वालों को मेरे निकल भागने की बात मालूम हुई, तो वे क्या कहेंगे !"

"दौड़ !"

"दिल्ली की ओर !"

आस-पास ही दो व्यक्ति के मकान थे। कभी कभी यदा-कदा दोनों व्यक्तियों में नमस्कार-पांती हो जाया करती थी। एक दिन एक महाशय के घर की खिड़की खुली और उन्होंने दूसरे से पूछा—अच्छा यह तो बताइये कि गत साल आपके कुत्ता का पेट जब गड़बड़ाया था तो आपने उसे क्या खिलाया था?"

"तार्पिन का तैल", दूसरे व्यक्ति की ओर से उत्तर मिला। और धन्यवाद देते हुए पूछने वाले व्यक्ति ने धड़-से अपनी खिड़की को बन्द कर ली।

पांच मिनट बाद फिर खिड़की खुट से खुली और प्रश्न हुआ—"हां भाई! कितना तार्पिन का तैल खाने को दिया था!"

"एक गैलन खिलाया था"—उत्तर मला। फिर खिड़की धड़ाम आवाज करती हुई बन्द हो गई।

तीन दिन बाद फिर खिड़की खुली। प्रश्न हुआ—"उस दिन तो आपने बताया था न कि आपके कुत्ते का पेट जब गड़बड़ाया था तो आपने एक गैलेन तार्पिन का तैल उसे पिलाया था।

"हां",—उत्तर मिला।

"हमने भी अपने कुत्ते को एक गैलन तार्पिन का तैल पिलाया था—लेकिन वह मर गया।"

"मेरा कुत्ता भी तो तार्पिन का तैल खिलाने पर मर गया था।"

० ० ०

"जब मैंने व्यापार शुरू किया तो मेरे पास अनुभव था और मेरे हिस्सेदार के पास पूंजी।"

'तब तो पूंजी और अनुभव के मेल से आपका व्यापार खूब चमका होगा?"

"और क्या, अंत में मेरे पास पूंजी और उसके पास अनुभव हो गया।"

"रौंग नम्बर !"

"हलो कुमारी जी, "रौंग नम्बर" है तो क्या हुआ, वार्त्तालाप कीजिये न !"

भावी पत्नी—"अच्छा श्याम, अगर हम मांगें तो क्या तुम एक हजार रुपये पैचा दे सकते हो ?"

"श्याम क्यों नहीं दे सकता हूं !"

भावी पत्नी—अच्छा तो एक हजार पैचा तो दो—लेकिन अभी उसमें से पांच सौ ही दो।"

श्याम—"ठीक है। लेकिन यह क्यों ?"

भावी पत्नी—"यह इसलिए कि तब पांच सौ पावना मेरा तुम्हारे यहां रहेगा और तुम्हारा पांच सौ मेरे यहां, जिससे हमलोगों का पलरा बराबर रहेगा।"

० ० ०

मि० जॉन," एक डरपोक युवक ने थरथराते हुए कहना प्रारम्भ किया,.....क्या.....क्या.....मैं.....आपसे.....।"

"हां, हां, उसको तुम ग्रहण कर सकते हो",—हंसते हुए कन्या के पिता ने कहा।"

युवक स्तंभित हो उठा। "वह क्या ? किसको ग्रहण करना है ?—युवक ने पूछा।

"मेरा मतलब मेरी लड़की से है।" जॉन ने कहा। "यही तो तुम्हारा भी मतलब है न ? तुम मेरी लड़की से विवाह करना चाहते हो न ?"

"जी नहीं, मैं तो यह जानना चाहता था कि आप मुझे सौ रुपये उधार दे सकते हैं या नहीं।"

"हर्गिज नहीं !" जॉन ने तमक कर कहा। "मैं तुमको जानता जो नहीं हूं !"

० ० ०

"साहब यदि अपनी बात वापस नहीं लेते हैं, तो मैं आज नौकरी छोड़कर चला चला जाऊंगा।"

क्यों, साहब ने तुमसे क्या कहा है ?"

"अरे, कहा क्या ? कहा है—"आज से तुमको बरखास्त किया।"

"बोझा !"

"गेस्ट, गेस्ट, लो, फिर गेस्ट कोई आ रहा है !"

ग्राहक—"तुम तो कहते थे कि यह कमीज बिल्कुल ऊनी है। इसके लगी हुई चिट पर तो लिखा है, "बिल्कुल सूती।"

दूकानदार—"आप समझे नहीं, यह चिट तो कीडों को धोखे में डालने के लिए लगायी हुई है।"

० ० ०

"मेरे पास पांच मील की दौड़ में जीता हुआ एक सोने का मैडल, हॉकी में जीता हुआ कप, तैरने में जीती हुई शील्ड, कुश्ती में जीती हुई दो चांदी की मुगदर हैं।"

"तब तो तुम बड़े स्पोर्ट्समैन हो!"

"स्पोर्ट्समैन? अरे मैं तो गिरवी रखने का काम करता हूं!"

० ० ०

पृथ्वी का नक्शा दिखाते हुए शिक्षक ने श्याम से कहा—अच्छा, खड़ा होकर अंगुली रखकर यह तो बताओ कि अमेरिका कौन है?"

श्याम ने आकर ठीक जगह पर अंगुली रख दी।"
खुश होकर शिक्षक ने दूसरे छात्र से पूछा—

"हरि इस बार तुम बताओ तो अमेरिका को किसने ढूढ़ निकाला?"
हरि ने चटपट उत्तर दिया—"श्याम ने, सर!"

० ० ०

"एक आदमी को कुछ धुंधला सूझता था। एक दिन तो तेज हवा में उसका टोप उड़ गया। वह उसके पीछे दौड़ा। पास के मकान से एक औरत चिल्लाकर बोली—

"यह तुम क्या कर रहे हो?"

"अपना टोप पकड़ने दौड़ रहा हूं।"

"अपना टोप पकड़ने? तुम तो हमारी काली मुर्गी के पीछे दौड़ रहे हो।"

"नाक की बोली !"

पत्नी—"तुम्हारे मुख से जीवन पर्यन्त कभी सुन्दर बोली नहीं निकलेगी।"

"पति—"बराबर जो नाक से ही बोलता आया हूं।"

स्कूल के एक नाटक में किसी विद्यार्थी को बेवकूफ का पार्ट खेलना था। उसने अपने एक मित्र से सलाह ली, "मुझे मूर्ख दिखने के लिए क्या करना चाहिए?"

मित्र—"कुछ नहीं, जैसा है वैसा ही दिखाना।"

० ० ०

तीन कछुओं ने कॉफी पीने का निश्चय किया। ज्योंही वे कॉफी गृह में पहुंचे, त्योंही वर्षा होने लगी। इसलिए सबसे बड़े कछुए ने सबसे छोटे कछुए से कहा—"घर जाकर छाता ले आओ।"

छोटे ने कहा—"यदि तुम मेरी कॉफी न पीओ तो मैं घर जा सकता हूं!"

"अच्छा नहीं पीयेंगे, जाओ"—बाकी दोनों कछुओं ने कहा। दो वर्ष के बाद सबसे बड़े कछुए ने मझोले से कहा—"मैं ऐसा अनुमान करता हूं कि वह अब लौटने वाला नहीं है, अतः हम दोनों उसकी कॉफी को पी जायं तो क्या हर्ज है?"

तभी दरवाजे के बाहर से एक धीमी आवाज आई—"यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं नहीं जाऊंगा।"

० ० ०

एक महिला भीड़ से भरे शहर के एक कार-पार्क में ज्योंही अपनी कार लेकर पहुंची पुलिस ने उसे रोक दिया और आश्चर्य से पूछा—"आपका लाइसेंस प्लेट तो औंधा पड़ा है!"

"हाँ", उसने शीघ्र उत्तर दिया। "ऐसा करने से मेरा काफी समय बच जाता है। कार-पार्क में अपनी कार को खोजने के लिए मुझे इधर उधर भटकना नहीं पड़ता।"

० ० ०

"अजी! यह चाय है या कॉफी!" गुस्से से ग्राहक चिल्लाया, "इससे तो सड़ी तरकारी जैसी दुर्गंध आ रही है।"

"जी, तब तो यह कॉफी ही है।" दूकानदार ने सफाई दी, "हमारी चाय में से सिगरेट या पुराने अचार जैसी बू आती है।"

"अस्तूरा काण्ड !"

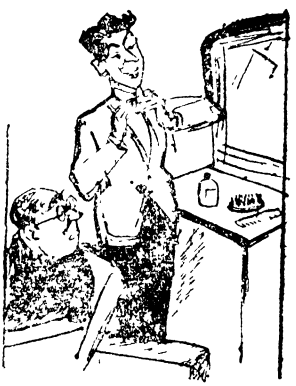

दाढ़ी बनाते हुए हज्जाम से—"अरे भाई! पीने का एक ग्लास पानी तो दो !"

हज्जाम—"मुंह में बाल चला गया ?"

"अरे नहीं जी, पानी पीकर देखना है कि कहीं हो गया है ?"

गंदा घर देखकर मालकिन नौकर पर बिगड़ी, "यह टेबुल देखी है? इसकी धूल में मैं अपना नाम लिख सकती हूं....."

"जरूर लिख सकती हैं मालकिन! आप पढ़ी-लिखी हैं न, नौकर बोला हम बेचारे तो पढे ही नहीं.....!"

० • ०

सी० आई० डी० अफसर, "हाँ, अब अपना नाम बताओ।"

कैदी, "जी, मेरा नाम गोविन्द दास है!"

"बको मत! जान्ते नहीं मैं सी० आई० डी० अफसर हूं, सच उगलवाना जानता हूं।"

"तो फिर.....मुहम्मद रफी लिख लीजिए।"

"हाँ, आ गये रास्ते पर! तुम्हारा ख्याल था गोविन्द दास कहकर तुम मुझे बेवकूफ बना दोगे?"

० ० ०

एक अंग्रेजी पादरी लोगों को उपदेश दे रहे थे—"आने वाले प्रलय से तो बचिये! जानते हैं,—आगे मार-पीट होगी, खून-खराबी होगी, रोना-पीटना होगा, दाँत किटकिटाये जायंगे.....'

बीच ही में एक बुढ़िया बोली—"मेरे दाँत नहीं हैं, साहब।"

पादरी—"मेम साहब, आपको दाँत दे दिये जायेंगे।"

० ० ०

"कल मैं चिड़िया घर देखने गया था।"

"सच? मैं भी तो वहीं था!"

"अच्छा? किस पिंजड़े में?"

० ० ०

विजय—"चित्र में शाम होने का एक दृश्य देखिये। मेरी बेटी ने इसे जंगल में जाकर खींचा है।"

पोपटलाल—"वही तो कहते हैं! वर्ना ऐसी शाम शहर में कहाँ मिलेगी!"

• • ०

"निरपराध !"

जज– पाकेटमारी करते समय तुम पकड़े गये हो ! अपने अपराध को स्वीकार करने में तुम्हें कोई आपत्ति है, क्या ?"

अपराधी—मैं निरपराध हूं, हजूर ! पकड़े जाने के लिए उत्तरदायी नहीं हूं। उस आदमी का पाकेट ही इतना तंग था कि हाथ डालने के बाद फिर हाथ बाहर निकाल ही न सका।"

"आपको मेरा नया टोप कैसा लगता है ?"

"टोप है क्या यह ? बिल्कुल रद्दी की उलटी टोकरी-सा मालूम होता है।"

"लेकिन यह रद्दी की उलटी टोकरी ही तो है।"

० ० ०

जगली—"साहब, मैंने यहां से एक मील उत्तर की ओर चीते के पैरों के निशान देखे हैं।"

शिकारी—"अच्छा! दक्खिन किस तरफ है ?"

० ० ०

माली—(सेब के पेड़ के पास घूमते हुए लड़के से) "क्या तुम सेब की फिराक में हो ?"

लड़का—"नहीं, मैं यह कोशिश कर रहा हूं कि न लूं!"

० ० ०

"अगर तुम्हें शुक्रवार को चार पैसे दिये जायें और शनिवार को एक, तो बोलो तुम्हारे पास कितने पैसे हो जायेंगे ?"

"सात।"

"पागल की तरह बात करने लगे। चार और एक तो पांच होते हैं।"

"लेकिन दो मेरे पास पहले से ही मौजूद थे।"

० ० ०

जज—"क्या तुम अपराधी हो ?"

कैदी—"मैंने अभी गवाही नहीं सुनी।"

० ० ०

सजा पूरी होने पर जेलर ने चोर को छोड़ते हुए उपदेश दिया—जाओ अब अपनी आदत सुधार कर रखना। लेकिन कैदी खड़ा रह गया।

जेलर—"अब किसलिए खड़े हो ?"

कैदी—"अपने औजारों के लिए।"

० ० ०

"क्या यह दूध ताजा है ?"

"ताजा ? मां तीने घंटे पहले तो यह घास था।"

"बड़ा आदमी का बेटा !"

रेस्टुरेन्ट का एक वॉय—"जानते हैं, आपके लड़के जब कभी इस होटल में खाने आते हैं, तो आपसे कहीं अधिक 'बकसिस' देते हैं, बाबू !"

लड़के के पिता—हो सकता है, भाई ! —उसका पिता बड़ा आदमी है—हमारे "बड़ा आदमी पिता" तो अब जीवित नहीं रहे

"आपका टेलिफोन नम्बर ?"
"टेलिफोन डायरेक्टरी में दिया है।"
"आपका नाम ?"
"वह भी उसी में होगा।"

० ० ०

पहला—"वे दोनों अपनी शादी की बात को गुप्त रखे हुए हैं ?"
दूसरा—"जी। सबसे तो वे यही कहते फिर रहे हैं।"

० ० ०

"भाई आज तो भगवान की कृपा से बच गये!"
"क्या हुआ ?"
"मेरे ऊपर से मोटर निकल गई, यार!"
"फिर कैसे बचे ?"
"मैं पुल के नीचे खड़ा था।"

० ० ०

"तुम्हारा बैंक में कुछ है ?"
"हाँ, सिर्फ विश्वास!"

० ० ०

मकान मालिक—(फोन से) "हम अपने मकान का बीमा कराना चाहते हैं।"
मैनेजर—"शौक से करा सकते हैं! लेकिन पहले मैं आपका मकान देखूंगा।"
मकान मालिक—"तो फौरन आइये, मकान में आग लग रही है।"

० ० ०

"गाड़ी क्यों रुक गई ?"
"अलकोहल कम हो गया है।"
"क्या यह गाड़ी अलकोहल से चलती है ?"
"नहीं, लेकिन ड्राइवर चलता है।"

० ० ०

क्या इस होटल में ठंढा और गरम पानी मिलता है ?
"हाँ, हाँ, मिलता है, गर्मी में गरम और जाड़े में ठंढा।

"पत्नी को पैदल नहीं घुमाइये !"

पति—"रास्ते के लोग बार-बार तुम्हारी ओर देखते हैं, देवीजी !"
पत्नी—"वे लोग मेरी ओर नहीं, आपकी ओर देखते हैं।"
पति—"मेरी ओर क्यों ?"
पत्नि—जो अपनी पत्नी को गाड़ी में नहीं चढ़ाकर पैदल ही घूमावे, वैसे हतभाग्य पुरुष को देखे बिना भी कोई रह सकता है क्या ?"

मालती—"शारदा, तूने मेरे पत्र का उत्तर क्यों नहीं दिया ?"

शारदा—"तेरा पत्र मुझे मिला ही नहीं, उत्तर कैसे देती ? और दूसरी बात यह है कि उसमें लिखी हुई कोई बात उत्तर देने लायक नहीं थी, उत्तर देती तो क्या ?"

० ० ०

पुलिस मैन (मुख्य कार्यालय को फोन करते हुए)—"एक आदमी का यहां सामान लुट गया है। मैंने एक को गिरफ्तार कर लिया है।"

अफसर—"किसको।"

पुलिसमैन—"लुटे हुए को।"

० ० ०

दरबान—"डॉक्टर साहब, मुझे क्या तकलीफ है बताइए तो।

डॉ०—"कुछ नहीं है, सिर्फ आलस आता है। "

दरबान—"तो इसका कोई भारी डाक्टरी नाम कहिए मुझे छुट्टी के लिए दरखास्त देनी है।"

० ० ०

राम- "क्या तुम मुझे अपने दर्जी का पता बता सकते हो ?"

मोहन—"जरूर, बशर्ते कि तुम उसे मेरा पता न बताओ ।"

० ० ०

करीम—"भला, यह कछुआ क्यों पाल रक्खा है ?"

सोहन—"सुना है कि कछुआ डेढ़ सौ वर्ष जीता है। इसी को जांचने के लिए पाला है।"

० ० ०

कप्तान—"बस, अब भगवान ही बचाये। हम जहाज को नहीं बचा सकते।"

कल्लू—"सुनता है लल्लू ? कप्तान कह रहा है कि जहाज डूबने वाला है !"

लल्लू—"डूबने दे, हमें क्या ? हामारा थोड़े ही है।"

"ट्रेन दुर्घटना !"

—"आपके जीवन में कभी ट्रेन-दुर्घटना घटी है ?"

—"अरे हां, भाई। अभी जो मेरी वर्तमान पत्नी हैं, उनके साथ मेरी प्रथम मुलाकात ट्रेन में ही हुई थी और वही मेरे जीवन की प्रथम और प्रधान ट्रेन-दुर्घटना है।"

"एक घोड़ा-गाड़ी वाले ने अपने घोड़े को हरा चश्मा पहना रक्खा था। किसी ने पूछा, "इसे हरा चश्मा क्यों पहनाया है ?"

घोड़ा-गाड़ीवाला बोला—"घास सूखी है, हरे चश्मे से वह हरा दीख पड़ेगी।"

• • ०

"क्यों मां, छोटा मुन्नू स्वर्ग में से आया है न ?"

"हां बेटा, क्यों ?"

"कैसा बेवकूफ है यह ! कैसी भूल कर बैठा। स्वर्ग छोड़कर इधर चला आया !"

० ०

"एक जेबकतरे ने किसी की घड़ी उचक ली। अगले दिन वह चोर-बाजार में बेंचने जा रहा था कि रास्ते में उससे भी बढ़कर एक उस्ताद जेबकतरे ने वह घड़ी तान दी। हजरत मुंह लटकाये घर लौटे तो बीबी ने पूछा, "घड़ी कितने को बेंची ?"

बोले, "जितने को खरीदी थी उतने को ही बेंच दी।

० ० ०

एक आदमी ने एक बक्स खरीदा।

दूकानदार—"कहिए लपेटकर बांध दूं इसे ?"

आदमी—"अजी नहीं, शुक्रिया, कागज और डोरी को इसके अन्दर रख दीजिए।"

० ० ०

मालिक—"तुम इस साल चार बार तो दाद के मरने की छुट्टी ले चुके हो, अब फिर छुट्टी क्यों चाहिए ?"

नौकर—"आज मेरी दादी फिर विवाह करने जा रही है।"

० ० ०

प्रश्न—सहशिक्षा का आरम्भ कब और कहां से हुआ ?"

उत्तर—"एडन के बाग में आदम और हव्वा से।"

० ० ०

शिक्षक—"बोलो प्रमोद, 'यू नो' माने क्या ?"

प्रमोद—"आप जानो साहब।"

"आत्म-हत्या का दायित्व !"

पति—"विवाह के बाद भी अपने कॉलेज-बन्धुओं को तुम्हारा इतना पत्र लिखना मुझे जरा भी पसन्द नहीं, रेवा !"

नवविवाहिता पत्नी—हमारे पत्र को नहीं पाकर यदि वे लोग निराश होकर आत्म-हत्या कर लें, तो उसका दायित्व किस पर होगा, जरा सुनें तो ?"

एक वक्ता ने अपने श्रोताओं से पूछा—"मान लीजिए कि मैंने एक बाल्टी पानी और एक बाल्टी शराब इस मंच पर रक्खी। उसके बाद आप एक गधा यहां तक ले आयें, दोनों में से वह किसको ग्रहण करेगा?"

"वह पानी ही पीयेगा", पीछे की गैलरी से आवाज आई।

"और वह पानी ही क्यों पीयेगा?" वक्ता ने पूछा।

"क्योंकि वह एक गधा है", उत्तर मिला।

० ० ०

शिक्षक—"दो सर्वनामों का नाम लो"

छात्र—"कौन? मैं?"

० ० ०

जज—"जाओ, तुम रिहा कर दिये गये।"

चोर—"क्या मैं छोड़ दिया गया!"

जज—"हां, छोड़ दिये गये।"

चोर—"सरकार, तो अब मुझे उस चुराई हुई घड़ी को वापस तो न करना होगा?"

० ० ०

डॉक्टर—"दर्द कितनी बार उठता है?"

मरीज—"पांच-पांच मिनट पर।"

डॉक्टर—"और कितनी देर रहता है?"

मरीज—"आध-आध घंटे तक।"

० ० ०

आज शाम तक अगर दो हजार रुपये का प्रबन्ध न हो सका तो मेरी बड़ी तौहीन होगी। इससे बचने के लिए मुझे जहर पी लेना पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय ही नहीं। तू मेरी मदद कर सकते हो दोस्त?"

"क्या करूं? मेरे पास तो एक बूंद भी नहीं है!"

० ० ०

"इस सवाल का जवाब तो एक गधा भी दे सकता है।"

इसीलिए मैंने खुद न होकर तुमसे पूछा था।"

"सुधार !"

"अपने पति की रात में बहुत देर से लौटने की आदत को तुमने कैसे दूर की ?"

"एक रात जब वह बहुत देर से आया तो मैं पुकार उठी—"कौन हो, श्यामसुन्दर ?"—और मेरे पति का नाम है, हरिशंकर।"

एक सज्जन बड़े हसोड़ थे। एक दिन मित्र-मंडली टेबुल की चारों तरफ कुरसियों पर बैठी हुई थी और वह सज्जन सभी लोगों को अपनी बातों से हंसा रहे थे।

एकाएक वह गुम हो गये और मित्रों ने देखा कि वह बेतरह भय-भीत और घबड़ा गये हैं।

"ऐसा क्यों? तबियत तो ठीक है?"

मित्रों ने पूछा।

"आखिर वही बात होकर रही।"

"क्या बात?"

"वही बात जिसका मुझे हमेशा भय था। आज से कितने साल पहले डाक्टर ने कह दिया था कि मुझे लकवा मारेगा और मैं मर जाऊंगा। आखिर वही बात हुई। ऐसा लग रहा है कि मेरे पैरों में लकवा मार गया है।"

"मैं कई बार चुटकी मार रहा हूं, पर दर्द नहीं होता है।"

बगल में बैठे हुए एक मित्र ने हंसते हुए कहा—

"यह तो खूब रहा! आप मेरे पैर में चुटकी ले रहे थे और संकोच से मैं कुछ नहीं कह रहा था!"

° ° °

कारपोरेशन के एक स्कूल में भर्ती होने के लिए आये हुए एक नये छात्र को शिक्षक ने पूछा—अच्छा बताओ तो, यह सुन्दर स्कूल किसके दान का फल है?"

"कांग्रेस"—लड़के ने कहा।

"दामोदरभेली कारपोरेशन का मूल कौन है?"

"कांग्रेस।"

"और सिन्दरी कारखाना का?"

"कांग्रेस।"

"अच्छा यह तो बताओ कि वृक्ष, वृक्ष के फल-फूल आदि किसके बनाये हैं?"

"ईश्वर"—लड़के ने जवाब दिया।

इतने में पीछे से क्लास के एक लड़के ने चिल्लाकर कहा—"सर, यह लड़का जरूर अ-कांग्रेसी है।"

"सिंह बनाम छोटी चिड़ियां !"

जब कभी आता हूं, तो देखता हूं कि सिंह के निकट कोई न कोई अवश्य पहरा देता है। मालूम होता है कि जरूर सिंह मर्मान्तक चोट करता है।"

"अरे नहीं भाई, छोटी-छोटी चिड़ियां जिससे उसे विरक्त न करे, इसीलिए पहरा दिलवाता हूं।"

घर वाला—"ये सब चीजें फौरन उस कोने में रख दो। रखते हो कि आऊं ?"

चोर—"सब नहीं साहब, जरा इन्साफ कीजिए। इनमें से आधी पड़ोस वाले की है।"

० ० ०

रहीम—"तुममें इतनी भी अक्ल नहीं है कि बारिश से बचकर साये में आ जाओ !"

करीम—"तुमसे दूनी अक्ल है।"

रहीम—"कैसे ?"

करीम—"बारिश हो ही नहीं रही है !"

० ० ०

डाक्टर की दूकान पर मरीजों की भीड़ लगी थी उन्होंने दूकान खोलते हुए कहा, "आप लोगों में से यहां सबसे देर से कौन बैठा है ?"

"मैं !" एक दर्जी ने बिल पेश करते हुए कहा, "जो कपड़े आप अभी पहने हुए हैं, उन्हें मैंने ढाई साल पहले बनाकर दिया था। उसीका हिसाब करने आया हूं।"

० ० ०

"तूने मेरे कुत्ते को भाले से क्यों मारा ?"

"तेरे कुत्ते ने मुझे क्यों काटा ?"

"तो तूने भाले के दूसरे सिरे से उसे क्यों न मारा

"तेरा कुत्ता दुम आगे करके मेरी ओर क्यों न आया ?"

० ० ०

बैंकर—"तो आप अभिनेता हैं ! बड़ी अच्छी बात है लेकिन यह बहुत लज्जा की बात है कि पिछले दस वर्षों से मैंने थियेटर देखा ही नहीं।"

अभिनेता—"कृपया लज्जित न हों। मैं तो इससे भी पहले से किसी बैंक में नहीं गया।"

० ० ०

पहला—"अबे, खंभे से क्यो टकराया जा रहा है ?"

दूसरा—"जन्म कुण्डली कहती है कि आज मेरा गलत कदम नहीं पड़ सकता।"